संगीत सुधा

मुनि विजयकुमार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संगीत सुधा

मुनि विजयकुमार

जैन विश्व भारती प्रकाशन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

– अर्थ सौजन्य –

स्वर्गीय श्री हुकुमचन्दजी व पतासी देवी नाहटा की स्मृति में उनके सुपुत्र कर्णसिंह, रतनलाल, मोतीलाल, सुरेन्द्रसिंह नाहटा (भादरा–दिल्ली–कलकत्ता–हैदराबाद)

प्रथम संस्करण : 2011

मूल्य : 40/– (चालीस रुपया मात्र)

प्रकाशक :
जैन विश्व भारती

कम्पोजिंग : सुरेन्द्र सोलंकी, नाथद्वारा

मुद्रक : पायोराईट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर

संगीत सुधा मुनि विजयकुमार मूल्य : 40/–

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

समर्पण

चांद सी शीतलता
सूरज सी तेजस्विता जहाँ पर होती थी साकार,
मेरे जैसे अनगिन,
अनपढ़ पत्थरों को दिया जिसने प्रतिमा का आकार,
नहीं भूल सकता कभी,
परमगुरु तुलसी का रहा जो मेरे पर उपकार,
गीतों की इस कृति संगीत सुधा का,
करता उस दिव्यपुरुष को सविनय उपहार।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आशीर्वचन

गीत निर्माण एक कला है और गीत गाना भी एक कला है। छन्द के नियमों का पालन करते हुए गीत के माध्यम से यथार्थ को प्रकट कर देना एक विशेष बात होती है।

मुनिश्री विजयकुमारजी स्वामी गीतकार भी हैं और गीतगायक भी हैं। उनमें शासनभक्ति और विनम्रता है। उनके द्वारा प्रस्तुत 'संगीत सुधा' पाठकों, श्रोताओं और गायकों को आध्यात्मिक आनन्द से सराबोर कराए। शुभाशंसा।

आचार्य महाश्रमण

10 नवम्बर, 2011
केलवा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वकथ्य

संगीत को सुधापान की उपमा दी जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। संगीत के स्वरों में जो संजीवनी शक्ति है वह दुनिया की अनेक जड़ी–बूंटियों व टॉनिक्स में उपलब्ध नहीं होती। संगीत के स्वरों ने अनेक हताश व निराश व्यक्तियों को उल्लास से भरा है, जीवन में पुरुषार्थी बनाया है। व्यसनों में लिप्त अनेक व्यक्तियों के दिल को बदलकर व्यसनमुक्त बनाया है और जीवन की सही राह दिखाई है। संगीत के सुरों में जब तन्मयता जुड़ जाती है तो उपद्रवों को शान्त होते हुए भी हमने सुना है।

तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य श्रीमज्जाचार्य के जीवन में ऐसे कई अवसर आये जहां उन्होंने संगान किया और सारा ही नजारा बदल गया। इतिहास की प्रसिद्ध घटना है। जयाचार्य वीदासर में विराजमान थे। एक रात अचानक कोई उपसर्ग घटित हुआ। आकाश से अंगारे बरसने लगे। जयाचार्य को छोड़कर सभी संत बेहोश हो गये। जयाचार्य ने अपने इष्ट का ध्यान लगाकर संगान शुरू किया। 'भिक्षु नै भारीमाल वीर गोयम सी जोड़ी रे' ढाल के एक–एक पद्य का निर्माण और संगान होता गया और संतों की बेहोशी दूर होती गई। 'भजो मुनि गुणां रा भंडारी हो' 'भिक्षु म्हारै प्रगट्याजी भरत खेतर में' आदि अनेक गीत किसी न किसी घटना को उपशान्त करने के लिए जयाचार्य द्वारा निर्मित हुए थे। परम पूज्य द्वारा रचित आराधना की ढालों ने अनेक व्यक्तियों को आराधक बनाया है व असमाधि से सदा के लिए मुक्ति दिलाई है। गुरुदेव श्री तुलसी प्रवचन में जब–जब संगान करते उसका जादुई असर लोगों के दिल दिमाग पर साक्षात् देखने को मिलता था।

संगीत को मैं अपने जीवन की मस्ती मानता हूँ। इसे मैं अपने जीवन का नैसर्गिक सौभाग्य भी कह सकता हूँ। कई बार अनुभव करता हूँ कि मैं गीत बनाता नहीं हूँ, किसी निमित्त से

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उनकी रचना हो जाती है। श्रद्धेय मंत्री मुनि की सेवा में अनेक क्षेत्रों में विचरण होता रहा है। अनेक अच्छी धुनें संगायकों द्वारा प्राप्त होती रही हैं। नये गीत बनाने की प्रेरणा भी मुझे उनसे मिलती रहती। उनकी भावना मुझे उन धुनों पर गीत बनाने के लिए मजबूर कर देती। इस तरह अनायास ही गीतों का यह संग्रह तैयार हो गया।

परमाराध्य गुरुदेव श्री तुलसी संगीत में मेरे आदर्श रहे हैं। उन्होंने इस दिशा में मुझे सदा प्रोत्साहित किया। उनकी परम कृपा को मैं सदा याद करता हूँ। अन्तर्प्रज्ञा के धनी आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का परोक्ष आशीर्वाद व महायोगी परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी की करुणा और वत्सलता मेरे लिए अनमोल धरोहर है। परम श्रद्धेय गुरुवर ने कृति पर आशीर्वचन लिखकर मेरे उत्साह को शतगुणित कर दिया। उनकी उदार हृदयता और अनुकम्पी चेतना ने मेरे मन को बहुत ज्यादा प्रभावित किया है। श्रद्धेय मंत्री मुनि श्री सुमेरमलजी स्वामी 'लाडनूं' का निकटतम सान्निध्य मेरे लिए अमृत तुल्य है।

मुनि कुमार श्रमणजी का योगदान भी मेरे लिए अविस्मरणीय है। उन्होंने सूक्ष्म दृष्टि से गीतों का निरीक्षण करके पुस्तक को सजाने–संवारने में सहयोग किया है।

'संगीत सुधा' पुस्तक के गीतों का सुधापान करके पाठक और श्रोता ऊर्जा सम्पन्न बनेंगे और परम समाधि का जीवन जीयेंगे, इसी सद्भावना के साथ –

भिक्षु विहार, केलवा
11/11/2011

मुनि विजय कुमार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या		पृष्ठ संख्या
1.	मंगलमय आज का दिन, मंगलमय कल होगा	1
2.	भावना भाऊं प्रातः शाम	2
3.	अहिंसा की चेतना का जागरण हो विश्व में	3
4.	काँटों में फूलों में सम रहना जीवन है	4
5.	भीतर का बन्धन टूटेगा मेरा	5
6.	पीते जो शराब करते हैं बर्बादी	6
7.	मानव दो दिन का मेहमान है	7
8.	इन्साफ की डगर पे, अपने कदम बढ़ाना	8
9.	हम अच्छे इन्सान, बन दिखलायेंगे	9
10.	आनन्द में, परमानन्द में	10
11.	कलियुग में भी सतयुग जैसा जीवन सुखी बनाएं	11
12.	विद्या का वरदान है, यह जीवन विज्ञान है	12
13.	झरना बहता पल–पल, करता है ध्वनि कलकल	13
14.	आओ, हम संकल्प करें जीवन को उच्च बनायेंगे	14
15.	योगाभ्यास से मिटायें रोग हम तमाम	15
16.	नित प्राणायाम करें, जीवन में बहे शान्ति की धारा	16
17.	हम कायोत्सर्ग प्रयोग करें, तन की चंचलता को छोड़ें	17
18.	ध्याऊँ मैं निज शिव स्वरूप को ध्याऊँ	18
19.	सद्गुरु का आह्वान, सुनो दे ध्यान	19
20.	संयम जीवन में लायें, स्वस्थ नागरिक कहलायें	20
21.	मंगलमय भावों को जीवन में अपनायें हम	21
22.	भावों पर टिकी हुई है, हर मानव की जिन्दगानी	22
23.	सद्गुण सब साकार जहाँ पर, श्रेष्ठ वही इन्सान है	23

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

24. अहिंसा भगवती की हम पूजा करें 24
25. वरदान ज़िन्दगी है, ये संत बताएं 25
26. जग के स्वार्थ भरे नाते, संत जन सबको समझाते 26
27. युवा दम्पती! निज जीवन में धार्मिकता को अपनाना 27
28. बिना श्रम के जिन्दगी में, सफलता मिल नहीं सकती 28
29. कुछ सोच, अरे राही! 29
30. खिली जो फिजां लग रही प्यारी–प्यारी 30
31. मैं शीश झुकाता हूँ, मुझे नाथ! निहारो तुम 32
32. जिन्दगी उपचार बनकर रह गई 33
33. मनुज अवतार पा तूंने, कमाया क्या अरे सोचो 34
34. मन मोरे सुन जरा 35
35. मान जा मेरे मन, छोड़दे बद्चलन 36
36. सकल जगत् में कहीं न मुझको सच्चा प्यार मिला 37
37. जाग उठो, ओ युवा बन्धुओं! कुछ करके दिखलाना है 38
38. माया नगरी में बनकर दीवाना 39
39. आशा का गगन, सपनों का चमन 40
40. सुनो लगाकर ध्यान, सुगुरु की वाणी 41
41. देखता हालत दुनिया की तो मन सोचता है 42
42. सपने सब किसके फले, कोई भी हो क्यों ना भले 43
43. ना छोड़े, ना छोड़े, ना छोड़े रे 44
44. ज्योति बन कर सदा जलना 45
45. मतलबी ये नाते, भरमाते, जन दुःख पाते हैं 46
46. होठों पर तेरे राम नाम, पर भीतर में जलती ज्वाला 47
47. सांसों की वीणा का गूंजे सरगम 48
48. गुरु को किया नमन कि मेरा दीप जल गया 49
49. गुरुवर हैं उपकारी, जाएँ हम बलिहारी 50
50. मंगल है गुरु नाम, गुरु की जय बोलो 51
51. ओ गुरुवर!वन्दन लो शत वार 52
52. गुरुवर के गीत मिलजुल गायें 53
53. श्री जिनशासन दीप बन, प्रकटे भिक्षु स्वाम 54
54. भिक्षु का नाम प्यारा, विश्व का है उजारा 56

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

55. सिरियारी का संत महान्, ओम् जय भिक्षु भिक्षु अभिधान 57
56. बाबै भीखण की जग में, महिमा है भारी 58
57. आँखों के सितारे मेरे सांवरिया 59
58. भिक्षु की गौरवमयी गाथा सदा गायें 60
59. सोते–उठते, खाते–पीते होठों पर इक नाम 61
60. वदनासुत तुलसी का हम गौरव गाते हैं 62
61. प्रज्ञा के अवतार परम गुरु महाप्रज्ञ को नमन हमारा 63
62. युगप्रधान आचार्यप्रवर को नमन करें 64
63. महाप्रज्ञ गुरुराज न भूले जायें 65
64. ऊगा स्वर्णिम दिन आज, हम मंगल गाएं 66
65. नमन महाश्रमण गुरुवर को, सदा जो जगमगाते हैं 67
66. महाश्रमण गुरुवर जी दुनिया से न्यारे हैं 68
67. शासन की शान हो, नेता महान् हो 69
68. मेरे दिल की हर धड़कन में गूंजे गुरु की आवाज 70
69. जहाँ हर डाल–डाल पर खिलते तप के फूल 71
70. संघ अपना प्राण है, संघ है अपनी शरण 72
71. साध्वीप्रमुखाएं प्रवर, तेरापंथ की शान 73
72. तेरापंथ शासन प्यारा है,यह धरती का उजियारा है 75
73. गौरवशाली संघ हमारा इसकी महिमा गाओ 76
74. जय बोलो, जय बोलो, धर्म–संघ की जय बोलो 77
75. वीर प्रभु के प्यारों, चिर निद्रा को तुम त्यागो 78
76. जगाने विश्व को इस धरा पर महावीर आये थे 79
77. सहारे तुम्हारे त्रिशलादुलारे, लाखों ने नैया पार उतारी 81
78. यों तो दुनिया में कई, पुरुष हुए हैं अवतारी 82
79. वो सबको प्यारा है, त्रिभुवन तारा है 83
80. जन मन मंगलकारी, नेमिनाथ नमो 84
81. तेरे द्वार पर खड़ा हूँ, करुणा नजर निहारो 85
82. द्वारे तुम्हारे प्रभु! कब से मैं खड़ा 86
83. तेरा कौन–सा है मन्दिर, जरा सामने आकर बतलादे 87
84. मुझे देव! तुम बतादो, कैसे तुझे रिझाऊँ 88
85. तुम्हें वन्दन करता हूँ, भक्ति रस से भरा 89

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

86. मन में बसा है, एक नाम तेरा 90
87. तेरी आरती उतारें 91
88. ध्यान धरूं, गुण गान करूं मैं 92
89. मेरे मन मन्दिर में आओ, मेरी नैया पार लगाओ 93
90. सांवरियाऽऽऽऽ तेरे चरणों में प्रणाम है, मेरा प्रणाम है 94
91. भगवन्! मन मंदिर में आओ 95
92. दरश बिन व्याकुल हैं ये प्राण 96
93. लो दयानिधे! चरण शरण में, द्वार तुम्हारे भक्त खड़ा है 97
94. प्रभु का नाम, प्रभु का नाम, भज ले मन! तूं प्रभु का नाम 98
95. ओ जरा कर ले प्रभु से तूं प्यार 99
96. सन्तजनों के पद पंकज में नित उठ शीश झुकाऊँ मैं 100
97. संत चरण गंगा की धारा 101

राजस्थानी गीत

98. तूफानां में भी नहीं झुक्यो, बीं महापुरुष नै नमन करां 102
99. आरती उतारूं बाबै भिखणजी री भाव स्यूं 103
100. बाबै भिखण जी रो नाम जपूँ भोर–भोर में 104
101. सांवरिया! थारै नाम रो, है म्हानै आधार 105
102. मां दीपांजी रो लाडलो, भिखण हो शुभ अभिधान जी 106
103. सिरियारी रे कण–कण में, चिहुँ दिशि में गिरी उपवन में 107
104. बाबो उपकारी, जावां बलिहारी 108
105. भिखण रा गुण गावां, स्वाम री मूरत ध्यावां 109
106. भादूड़ी तेरस नै आज, सुरग सिधाया हा गणताज 110
107. भिक्खू नाम री मैं माला फेरूं भोर–भोर में 111
108. ओ तो लाडांजी रो वीरो, माता वदना रो लाल 112
109. गुरुवर श्री तुलसी म्हारै कालजै री कोर है 113
110. मां वदना रा कूख उजागर, सद्गुण शेखर 114
111. म्हांनै याद घणा आवै, तेरापंथ रा धणी 115
112. तेरापंथ रा सरताज, युगां तक राज करो 116
113. म्हारै गुरुवर रो बड़ भ्रात सहसा सुरग सिधायो रे 117
114. सौभागी आपां घणां, पायो संघ महान् 118

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

115. म्हारै संघ में मर्यादा ही है जीवन आधार 119
116. संतां री वाणी, सुणल्यो लगाकर ध्यान 120
117. सुणल्यो थे किसान भाई! गुरु री शिक्षा हितकारी 121
118. मिनखां देही री, मिनखां देही री, मिनखां देही री 122
119. शरणो ले लै रे, धर्म रो शरणो ले लै रे 123
120. चौमासी चवदश आई है, आ नई प्रेरणा ल्याई है 124

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मंगलमय आज का दिन, मंगलमय कल होगा,
सबके हित का चिन्तन हो, पग–पग मंगल होगा।।
।।स्थायीपद।।

हो जीव मात्र के खातिर, करुणा की भावना,
आत्मा से दूर इक दिन, कर्मों का दल होगा।।1।।

दुश्मन को जीत लो तुम, मैत्री अरु प्रेम से,
खुशहाली लिए हुए नर! तेरा हर पल होगा।।2।।

बन जायेंगे सब अपने, वसुधा कुटुम्ब होगी,
परमार्थ भावना का जो, जीवन में बल होगा।।3।।

तुम अमित शक्ति के स्वामी मत दीनता लाना,
क्यों चिन्ता तुम करते हो, भावी उज्ज्वल होगा।।4।।

तुम 'विजय' गुणों को चुनकर पहनो सुन्दर माला,
सर्वोच्च शिखर छूने का अरमान सफल होगा।।5।।

लय :– प्रभु पार्श्वदेव चरणों में शत–शत प्रणाम हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भावना भाऊं प्रातः शाम,
शुभ भावों का चिन्तन करके पाऊँ मैं शिव धाम।।
।।स्थायीपद।।

सद्गुण शोभा फैलाऊँ श्री संपन्नोऽहं स्याम्,
अनुशासित सुविनीत रहूं ह्री संपन्नोऽहं स्याम्।।1।।

प्रज्ञा से संपन्न बनूं, धी संपन्नोऽहं स्याम्,
सहना सीखूं, धैर्य रखूं, घृति संपन्नोऽहं स्याम्।।2।।

शक्ति–शान्ति संपन्नोऽहं, नंदी संपन्नोऽहं स्याम्,
तेजः और शुक्ल संपन्नोऽहं अब बनूं ललाम।। 3।।

नव मंगल भावों से जीवन बन जाये अभिराम,
रमण करूं परमात्मरूप में संकट मिटे तमाम।। 4।।

स्वीकृत पथ पर बढ़ता जाऊँ, लूँ मैं नहीं विराम,
''विजय'' श्रेय को प्राप्त करूँ, सध जाये वांछित काम।।5।।

लय :– तावड़ो धीमो पड़ज्या रे .....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अहिंसा की चेतना का जागरण हो विश्व में,
प्रेम अनुकम्पा भरा जन आचरण हो विश्व में।।
।।स्थायीपद।।

अहिंसा ही प्राणियों की शान्ति का आधार है,
बन्धुता की भावना का अवतरण हो विश्व में।।1।।

जहर नफरत का कभी भी मनों में मत घोलना,
हिन्दू–मुस्लिम–सिक्ख सबका मिलन हो अब विश्व में।।2।।

प्रेम से जीता सभी का दिल परम प्रभु वीर ने,
महापुरुषों के चरण का अनुसरण हो विश्व में।।3।।

दूरियाँ बढ़ती परस्पर दुश्मनी के भाव से,
मनुज को लखकर मनुज पुलकित नयन हो विश्व में।।4।।

अहिंसा यात्रा सुगुरु की कर रही आह्वान है,
मित्रता से हर समस्या का शमन हो विश्व में।।5।।

लय :– गज़ल .....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

काँटों में फूलों में सम रहना जीवन है,
समता से हर घटना को सहना जीवन है।।
।।स्थायीपद।।

ऊबड़–खाबड़ जीवन का पथ सीधा और सपाट नहीं,
देखा है दुनिया में हरदम सबका टिकता ठाठ नहीं,
चट्टानों में निर्झर ज्यों बहना जीवन है।।1।।

हर मानव के मन का कुछ अनचाहा भी यहाँ है होता,
ज्ञानी नर ऐसे में तनिक नहीं संतुलन है खोता,
बात सही पर मृदुता से कहना जीवन है।।2।।

भारभूत लगते सुख सारे होती जहाँ विषमता है,
उलझन पीछा नहीं छोड़ती, मन भी कहीं न थमता है,
भीतर के क्लेशों को बस दहना जीवन है।।3।।

'विजय' जिन्दगी की सरिता के सुख–दुख उभय किनारे हैं,
दुःख से सब घबराते हैं, जन सुख के इच्छुक सारे हैं,
लेकिन कष्टों में भी नित हंसना जीवन है।।4।।

तर्ज :– तुम दिल की धड़कन में रहती हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भीतर का बन्धन टूटेगा मेरा,
होगा उसी दिन नूतन सबेरा।।
।।स्थायीपद।।

कर्मों से मेरा चेतन घिरा है,
ममता के गड्ढ़े में यह गिरा है,
लालच का दानव जब–जब आता,
नीति–अनीति को यह भुलाता–2
इसको सताता मेरा–तेरा।।1।।

अपना मानूं जो है पराया,
परभावों में चित्त लुभाया,
क्रोध भुजंगम फण फैलाता,
मान मदारी नाच नचाता–2
अज्ञान का जब टूटेगा घेरा।।2।।

आकर्षणों में मन खोया रहता,
युग के प्रवाह में हरदम बहता,
शान्त न होती आशा–पिपासा,
छाया चारों ओर कुहासा–2
मोह माया का टूटे घेरा।। 3।।

चिन्मय दशा में रमण करूँगा,
जीवन रण में 'विजय' वरूँगा,
मस्त रहूँगा मैं जीवन में,
वास करूँगा आत्म भुवन में–2
शाश्वत सुखों में होगा बसेरा।। 4।।

लय :– चन्दन का पलड़ा रेशम की डोरी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पीते जो शराब करते हैं बर्बादी,
खोते वे जीवन धन बन इसके आदी,
पापों की जननी बताते हैं ज्ञानी,–2
मत तुम बनो गुलाम चाहते आजादी।।
।।स्थायीपद।।

हृदय, फेफड़े, गुर्दे, लीवर हैं खराब होते,
कई भयंकर बिमारियों का बोझ मनुज ढ़ोते,
पाचनतन्त्र बिगड़ता निश्चित भोजन नहिं भाता,
अल्प अवस्था में ही बिना मौत नर मर जाता,
फिर भी नहीं तजता शराब को हठवादी।।1।।
हो जाता है स्वाहा इस ज्वाला में सब पैसा,
घर वाले भूखे मरते हैं व्यसन बुरा ऐसा,
कर्जा लेने में भी नर संकोच नहीं करता,
सम्बन्धी ऐसे को रुपया देने से डरता,
परेशान माँ–पिता और दादा–दादी।।2।।
पीकर सुरा मनुज गंदी नाली में है गिरता,
अवसर लखकर कुत्ता उसका मुंह एंठा करता,
असर सुनिश्चित पड़ता है बच्चों की शिक्षा पर,
हो जाता है नष्ट शराबी का सारा ही घर,
अश्रु बहाती रहती उसकी शहजादी।।3।।
व्यसनों में पड़ता भविष्य में वह नर पछताता,
दृढ संकल्पी ही अपने में परिवर्तन लाता,
'विजय' सुगुरु की वाणी को पल भर भी मत भूलो,
त्याग और संयम पथ पर चल प्रगति शिखर छूलो,
जीवन शैली अपनाओ सीधी सादी।।4।।

लय :– दूल्हे का सेहरा सुहाना लगता है

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मानव दो दिन का मेहमान है,
जानकर भी नर अनजान है,
हर कदम तुम संभलकर चलो,
सद्गुरुओं का यह फरमान है।।
।।स्थायीपद।।

कच्चा धागा यह पल भर में है टूटता,
काँच की है खबर क्या यह कब फूटता,
सांस का तेल नहीं जाने कब खूटता,
प्राणों का पंछी उड़ जाये कब क्या पता,
होता निर्माण मुश्किल यहां,
ध्वंस होना तो आसान है, हर.....।।1।।
जीवन छोटा सा मानव! तुम्हें यह मिला,
हो सके तो करो तुम सभी का भला,
सीखलो सुख से जीने की सुन्दर कला,
बन्द दुर्भावना का करो सिलसिला,
प्रेम फूलों को जो बांटता,
गाते सब उसका गुणगान है, हर.....।।2।।
मित्र नजरों से जो सबसे मिलता यहां,
देख औरों को बन फूल खिलता यहां,
वृक्ष बन सबके खातिर जो फलता यहां,
न्याय–नीति के पथ पर जो चलता यहां,
जो 'विजय' सबका हित सोचता,
देते सब उसको सम्मान है, हर.....।।3।।

लय :– यह तो सच है कि भगवान् है

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

8.

इन्साफ की डगर पे, अपने कदम बढ़ाना,
है सार धर्म का यह, इसको नहीं भुलाना।।
।स्थायीपद।।

हो कष्ट दूसरों को ऐसा न काम करना,
कुछ कर सको अगर तुम औरों के घाव भरना,
सब हैं हमारे अपने, इस भाव को जगाना।।1।।

कांटा किसी के पथ का बनना नहीं तूं भाई,
बन फूल मुस्कराओ, सबकी करो भलाई,
बांटो उदार दिल से, तुम प्रेम का खजाना।।2।।

परमार्थ भावना को तुम मुख्य मान चलना,
फलवान वृक्ष की ज्यों हरदम यहां तूं फलना,
नन्हा सा दीप बनकर, पथ का तिमिर मिटाना।।3।।

गीता, पुराण, आगम सबकी यही है वाणी,
स्वार्थों का त्याग करता सच्चा वही है ज्ञानी,
नहीं भूलता 'विजय' है उसको कभी जमाना।।4।।

लय :– मुझे इश्क है तुम्हीं से.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हम अच्छे इन्सान, बन दिखलायेंगे,
सद्गुरु का आह्वान, नहीं भुलायेंगे,
गायेंगे यह गान, सदा हम गायेंगे।।
।।स्थायीपद।।

अच्छाई को स्वीकारेंगे, नहीं किसी का दुर्गुण लेंगे,
हंस की ज्यों हम मोती चुगते जायेंगे, गायेंगे.....।।1।।

मित्रतुल्य व्यवहार करेंगे, सबका हम सत्कार करेंगे,
नहीं वैर का भाव कभी अपनायेंगे, गायेंगे.....।।2।।

मर्यादा से सदा चलेंगे, कोई को भी नहीं छलेंगे,
अनुशासन के पथ पर कदम बढ़ायेंगे, गायेंगे.....।।3।।

व्यसनों से हम दूर रहेंगे, कटुक वचन भी सदा सहेंगे,
गौरवशाली संस्कृति को न भुलायेंगे, गायेंगे.....।।4।।

विनय भाव को विकसायेंगे, उच्छृंखलता दफनायेंगे,
'विजय' शिष्ट–शालीन मनुज कहलायेंगे, गायेंगे.....।।5।।

लय :– जागो तुम इक बार.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आनन्द में, परमानन्द में,
रमता रहूं नित आनन्द में।।
।स्थायीपद।।

नाना द्वन्द्वों से जगत् भरा है,
पग–पग रहता यहां खतरा है,
सुख का खजाना है निर्द्वन्द्व में।।1।।

सबके सुख में सदा सुख मानूं,
आत्म तुल्य मैं सबको जानूं,
है सार अनपार इस छन्द में।।2।।

बाह्य भावों में मन क्यों लुभाता,
निज भावों को क्यों है भुलाता,
खोया क्यों है रूप–रस–गन्ध में।।3।।

अन्तर्यात्रा करूं मैं सजग हो,
बढ़ूं सत्पथ पर 'विजय' अडिग हो,
सोचूं नित आत्मा के संबन्ध में।।4।।

लय :– आधा है चन्द्रमा रात आधी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कलियुग में भी सतयुग जैसा जीवन सुखी बनाएं,
अणुव्रती बन जाएं।।

।।स्थायीपद।।

आजादी का बिगुल बजा तब घर–घर खुशियां छाई,
विविध योजनाएँ नेताओं ने उस समय बनाई,
श्री तुलसी ने सोचा जग को नैतिक राह दिखाएँ।।1।।

भौतिक उन्नति से ही मन को शांति नहीं मिलती है,
आध्यात्मिक तत्त्वों से जीवन फुलवारी खिलती है,
मध्यम पथ अणुव्रत है, इसको आचरणों में लाएँ।।2।।

'संयम ही जीवन है' अणुव्रत का यह घोष निराला,
आतप में शीतल छाया ज्यों तम में एक उजाला,
अणुव्रत त्राण सभी को देता जीवन में अपनाएँ।।3।।

चाहे मुस्लिम हो या हिन्दू, चाहे सिक्ख इसाई,
अणुव्रत जीना सिखलाता है बनकर भाई–भाई,
मानवता के आदर्शों पर अब से कदम बढ़ाएँ।।4।।

पहले हम सुधरेंगे तो दुनिया सारी सुधरेगी,
आगे बढ़ने वालों का जनता अनुकरण करेगी,
'विजय' अणुव्रत का मंगल स्वर जन–जन तक पहुँचाएँ।।5।।

लय :– संयममय जीवन हो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

विद्या का वरदान है, यह जीवन विज्ञान है,
आचरणों में जो अपनाता, हो जाता कल्याण है।।
।।स्थायीपद।।

शिक्षा आज बढ़ी है लेकिन जीवन का स्तर नहीं बढ़ा,
फल–फूलों पर ध्यान बहुत है, किन्तु मूल से ध्यान हटा,
भूला नर निज भान है, नहीं हिताहित ज्ञान है।।1।।

सही ज्ञान के बिना मनुज, अभिमानी बनकर फूल रहा,
विनय और करुणा के सात्त्विक संस्कारों को भूल रहा,
पैसा बना प्रधान है, पैसा मानो प्राण है।।2।।

शारीरिक–बौद्धिक विकास ही शिक्षा का नहीं ध्येय बने,
भावात्मक, मानस विकास भी शिक्षा में आदेय बने,
शिक्षा नर की शान है, बनता मनुज महान् है।।3।।

गुण फूलों से महक उठे, बच्चों की जीवन फुलवारी,
प्रायोगिक शिक्षा को अपनाये, अध्यापक–अधिकारी,
सद्गुरु का आह्वान है, ''विजय'' सद्गुरु ही शान है।।4।।

लय :– जिया बेकरार हैं.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

***झरना बहता पल–पल, करता है ध्वनि कलकल,**
आकर्षक लगता है सबको, हरता धरती का मल,
रहता निर्मल सदा समुज्ज्वल–4।।

।।स्थायीपद।।

मधुर ध्वनि सबको प्रिय लगती, सब यह जाने,
रुक जाते हैं राही सुनकर मीठे गाने,
कर्कश ध्वनि सुनते ही मन खट्टा हो जाता,
श्रोताओं को ऐसा वक्ता नहीं सुहाता,
प्रिय–अप्रिय लगता है मानव अपनी ही ध्वनि के बल।।1।।
बड़ी भक्ति से रानी को घर पर था लाया,
और बीरबल ने अच्छा भोजन करवाया,
उठते–उठते एक शब्द तुरकणी कह दिया,
पानी में बह गया सकल सम्मान जो किया,
शहजादी का मधुर–मधुरतम भोजन बना हलाहल।।2।।
बढ़ता हुआ प्रदूषण ध्वनि का विकट पहेली,
भूल रहा मानव जीवन की सम्यक् शैली,
सुविधावाद बढ़ा है, वाहन खूब बढ़े हैं,
बाढ़ रुकेगी कब यह जलते प्रश्न खड़े हैं,
मन को अशान्त कर देता है यह बढ़ता कोलाहल।।3।।
है विज्ञान क्षेत्र में ध्वनि का प्रयोग जारी,
गायें देती दूध अधिक, उपशान्त बीमारी,
महाप्राण ध्वनि है जीवन विज्ञान सिखाता,
शुद्धोच्चारण होता, स्वर माधुर्य बढ़ाता,
'विजय' निरन्तर प्रयोग से ही निश्चित मिलता है फल।।4।।

लय :– छोड़ो कल की बातें, कल की बात पुरानी.....

*जीवन विज्ञान की पहली इकाई ध्वनि के संदर्भ में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

14.

***आओ, हम संकल्प करें जीवन को उच्च बनायेंगे,**
शुभ संकल्पों के द्वारा हम अपनी मंजिल पायेंगे,
बढ़ते जायेंगे, बढ़ते जायेंगे–2 ।।

।।स्थायीपद ।।

बढ़ना हमने लक्ष्य बनाया, पथ में नहीं रुकेंगे हम,
आये चाहे चट्टानें प्रण से नहीं तनिक झुकेंगे हम,
पौरुष की स्वर्णिम स्याही से अपना भाग्य लिखेंगे हम,
दूषित वातावरण भले दोषों से सदा बचेंगे हम,
पा जीवन विज्ञान प्रशिक्षण तम को दूर हटायेंगे।।1 ।।
दीन–हीन बन जीवन जीना हमको नहीं सुहाता है,
लगता फूल मनोहर जो हरदम रहता मुस्काता है,
धीर–वीर बालक ही सबके मन को हरदम भाता है,
गुरुओं की नजरों में अपना ऊंचा स्थान बनाता है,
सद्गुण सुमनों की सौरभ से उपवन को महकायेंगे।।2 ।।
प्रज्ञा से सम्पन्न बने हम पहला लक्ष्य हमारा है,
बनें शक्ति सम्पन्न प्रवर हम शक्तिमान नर प्यारा है,
बनें स्वास्थ्य–सम्पन्न मनुज हम गूंज रहा यह नारा है,
और विनय सम्पन्न बनेंगे, हमने प्रण स्वीकारा है,
अणुव्रत के वर्गीय नियम हम जीवन में अपनायेंगे।।3 ।।
माँ पुतली ने गांधी को संतों से नियम दिलाया था,
विदेश में रहकर व्यसनों से खुद को वहां बचाया था,
दृढ़ प्रतिज्ञ बन वीर–बुद्ध ने साध्य स्वयं का पाया था,
लेकर के संकल्प विज्ञ पुरुषों ने कदम बढ़ाया था,
'विजय' स्वस्थ नागरिक बन हम जग का ताप मिटायेंगे।।4 ।।

लय :– आओ बच्चों तुम्हे दिखाएं.....

*जीवन विज्ञान की दूसरी इकाई संकल्प के संदर्भ में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

***योगाभ्यास से मिटायें रोग हम तमाम,**
जिन्दगी की नाव अपने हाथ में लें थाम,
स्वस्थ मन, स्वस्थ तन, हम बनें स्वस्थ मन–2।।
।।स्थायीपद।।

रुग्ण होना चाहता नहीं है कोई भी यहां,
किंतु रोग मुक्त आदमी नजर आता कहां,
लग रहा ज्यों अश्व पर नहीं रही लगाम।।1।।

आदमी अच्छा वही जिन्दादिली हो जिन्दगी,
सावधान नर कभी घुसने न देता गन्दगी,
मार्ग में वह साहसी लेता नहीं विराम।।2।।

सर्वशक्तिमान बनना जो हमारा ध्येय है,
स्फूर्ति और ताजगी आदेय और श्रेय है,
लक्ष्य पाना है अगर प्रातः करें व्यायाम।।3।।

'विजय' तन मशीन तुल्य साधना का हेतु है,
लब्धियों–उपलब्धियों का एक मात्र सेतु है,
साधकर अभ्यास से लें मित्र तुल्य काम।।4।।

लय :– देश के लिए बढ़ो ए देश के जवान.....

*जीवन विज्ञान की तीसरी इकाई सम्यक् व्यायाम के संदर्भ में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

16.

***नित प्राणायाम करें, जीवन में बहे शान्ति की धारा,**
हो सम्यक् श्वास हमारा।।

।।स्थायीपद।।

होता है छोटा श्वास रुग्णता वहां वास है करती,
दूषित उच्छ्रङ्खल मनोभावना रहती वहां उभरती,
कुण्ठा और तनावों से नहीं मिलता है छुटकारा।।1।।

है श्वास डोर से बंधा हुआ यह पतंग हर जीवन का,
कब रुक जायेगी नहीं भरोसा बहती हुई पवन का,
निज हित को साध सके नर इसके समुचित प्रयोग द्वारा।।2।।

है तीन अवस्थाओं में पहली पूरक, भीतर भरना,
रेचक है दूजी, भरे श्वास को पूरा खाली करना,
बाह्याभ्यन्तर कुम्भक तीजी, गुरु ने यही उचारा।।3।।

नाश्ते से पहले सदा सबेरे प्राणायाम करें हम,
प्रज्ञासम्पन्न बने ज्योतिर्मय दीर्घायुष्य वरें हम,
दृढ़ निष्ठा जुड़े साथ में निश्चित होगा 'विजय' उजारा।।4।।

लय :– जहाँ डाल–डाल पर सोने की चीड़ियाँ करती हैं बसेरा .....

*जीवन विज्ञान की चौथी इकाई सम्यक् श्वास के संदर्भ में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

***हम कायोत्सर्ग प्रयोग करें, तन की चंचलता को छोड़ें,**
शान्त और स्थिर होकर, अपनी आत्मा से लयता जोड़ें।।
।।स्थायीपद।।

है चक्र तनावों का ऐसा, है फंसी हुई दुनिया सारी,
बच्चे, बूढ़े, जवान, सबको लगी हुई है महामारी,
अपने घर में रहना सीखें–2, क्यों बाहर–2 रात दिवस दौडें।।1।।

लेता है सांस मनुज लेकिन बेहोशी का जीवन जीता,
समृद्धि बढ़ी है ऊपर की आनन्द खजाना है रीता,
मन का मांझी दिग्भ्रान्त हुआ–2, सत्पथ पर–2 हम उसको मोड़ें।।2।।

आशंकाओं से घिरे मनुज को नींद नहीं सुख से आती,
है निदान कायोत्सर्ग सहज ही विकट समस्या मिट जाती,
कल्पित है भय का गुब्बारा–2, हिम्मत कर–2 अब उसको फोड़ें।।3।।

एड़ी से सिर तक हर अवयव को सुझाव दें कोमलता से,
हल्केपन की अनुभूति करें हम भावों की निर्मलता से,
है 'विजय' स्वयंकृत बन्धन सब–2, उनको हम–2 शनैः शनैः तोड़ें।।4।।

लय :– है प्रीत जहां की रीत वहाँ.....

*जीवन विज्ञान की पांचवीं इकाई कायोत्सर्ग के संदर्भ में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

***ध्याऊँ मैं निज शिव स्वरूप को ध्याऊँ,**
प्रेक्षा की पावन गंगा में नित उठकर में न्हाऊँ।।
।।स्थायीपद।।

सांस–सांस में सजग रहूँ मैं,
अपने में खो जाऊँ, ध्याऊँ.....।।1।।

वर्तमान में जीना सीखूँ,
बीती बात भुलाऊँ, ध्याऊँ.....।।2।।

विषयों से निर्लिप्त रहूँ मैं,
प्रज्ञा दीप जलाऊँ, ध्याऊँ.....।।3।।

भरी सम्पदा है मेरे में,
बाहर क्यों ललचाऊँ, ध्याऊँ.....।।4।।

राग–द्वेष दोनों से हटकर,
'विजय' परम पद पाऊँ, ध्याऊँ.....।।5।।

लय :– पायोजी मैंने राम रतन धन पायो.....

*जीवन विज्ञान की छठ्ठी इकाई प्रेक्षा ध्यान के संदर्भ में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

***सद्गुरु का आह्वान, सुनो दे ध्यान,**
सफलता को वरो,
शरीर का विज्ञान, घ्यान इस पर धरो,
ओ ऽऽ अमृत से घट भरो।।स्थायीपद।।

तन को संचालित करने वाले यों तंत्र अनेक हैं,
रहती है सक्रियता इनमें जागृत जहां विवेक है,
स्वस्थ बने पहचान, सुनो दे ध्यान————।।1।।

है शरीर का ढांचा ऐसा चलता ज्यों उद्योग है,
नियमों का जो पालन करता, रहता वही निरोग है,
कैसे हो उत्थान, सुनो दे ध्यान————।।2।।

यों असार तन किन्तु छिपा है इसमें सार अपार है,
जागरूक जन परम तत्त्व से करते साक्षात्कार हैं,
मिट जाये अज्ञान, सुनो दे ध्यान————।।3।।

पढ़ जीवन विज्ञान, देह की क्षमताओं को जन जानें,
शेरों की संताने हैं वे निज आकृति को पहचानें,
'विजय' करो निर्माण, सुनो दे ध्यान————।।4।।

लय :– भारत म्हारो देश, पूठरो वेश.....

*जीवन विज्ञान की सातवीं इकाई शरीर विज्ञान के संदर्भ में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

***संयम जीवन में लायें, स्वस्थ नागरिक कहलायें,**

सात्त्विकता को अपनायें, स्वस्थ नागरिक कहलायें।।
।।स्थायीपद।।

पहला सुख तन नीरोगी, बने स्व पर हित सहयोगी,
जीने की शैली बदलें, अवसर से पहले संभले,
पग–पग पर मंगल पायें, स्वस्थ.....।।1।।

देहपूर्ति हित है भोजन, पर मात्रा का हो चिन्तन,
नहीं संतुलन को छोड़ें, मर्यादा न कभी तोड़ें,
ओजस्वी हम बन जायें, स्वस्थ.....।।2।।

दुर्व्यसनों से दूर रहें, प्रवाह में हम नहीं बहें,
करें नियन्त्रण अपने पर, दिनचर्या भी हो सुन्दर,
जीवन उपवन सरसायें, स्वस्थ.....।।3।।

गुरुओं का है पथ दर्शन, बने सादगीमय जीवन,
उनके पदचिन्हों पर चल, हर कोई जन बने सफल,
'विजय' ध्वजा हम फहरायें, स्वस्थ.....।।4।।

लय :– आगे बढ़ते जायेंगे.....

*जीवन विज्ञान की आठवीं इकाई स्वास्थ्य विज्ञान के संदर्भ में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

21.

***मंगलमय भावों को जीवन में अपनायें हम,**
मन को स्वस्थ बनायें हम।।स्थायीपद।।

मन होगा यदि स्वस्थ, बुद्धि भी स्वस्थ सदैव रहेगी,
बुद्धि जहां है स्वस्थ, ज्ञान की सरिता वहां बहेगी,
सर्वांगीण प्रगति के पथ पर कदम बढ़ायें हम।।1।।

रुग्ण मानसिकता वाले पग–पग पर विपदा पाते,
चाहे किसी क्षेत्र में उतरें वे पीछे रह जाते,
रोगों के चंगुल से अपने को बचायें हम।।2।।

सबका हित जो मनुज सोचता उसका मंगल होता,
उसको फूल कहां से मिलते जो है कांटे बोता,
गुरुवाणी सुन मनोमलिनता दूर हटायें हम।।3।।

मन घोड़े पर संयम की लगाम रखते जो हरदम,
बनते हैं वे आत्म विजेता, कहलाते नर उत्तम,
'विजय' जाप–अनुप्रेक्षा से सच्चा धन पायें हम।।4।।

लय :–1. जवाहर लाल बनेंगे हम .....
2. म्हारै देश की आजादी पर तन–मन–धन कुर्बान.....

*जीवन विज्ञान की नौंवी इकाई मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

***भावों पर टिकी हुई है, हर मानव की जिन्दगानी,**
सुन्दर सरसब्ज किसी को लगती रसहीन कहानी।।
।।स्थायीपद।।

नगरी थी वही, मनुज वे, पर अलग–अलग था दर्शन,
थे दोषी लगते इक को, दूजे को सभी गुणीजन,
भावों के बिम्ब सभी हैं, कहते श्री मुख से ज्ञानी।।1।।

है मित्र एक मनमोहक, लगता औरों को दुश्मन,
होती है घृणा अपर को पैदा होता आकर्षण,
भावानुरूप है चिन्तन, शास्त्रों की है यह वाणी।।2।।

सुधरेंगे भाव अगर तो मानव स्वभाव सुधरेगा,
व्यवहार सुसंस्कृत होगा प्रेक्षा प्रयोग उतरेगा,
अनुभूत सत्य है इसमें चलती न तनिक मनमानी।।3।।

हम 'विजय' विधायक सोचें जो सफल ज़िन्दगी जीना,
सब भाव निषेधक त्यागें जो शान्त सुधारस पीना,
जीवन विज्ञान प्रशिक्षण की नहीं जगत् में सानी।।4।।

लय :– ए मेरे वतन के लोगो.....

*जीवन विज्ञान की दसवीं इकाई भावनात्मक स्वास्थ्य के संदर्भ में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

***सद्गुण सब साकार जहाँ पर, श्रेष्ठ वही इन्सान है,**
मानवीय मूल्यों की रक्षा ही, संस्कृति की शान है।।
।।स्थायी पद।।

गौण सभी बातें, गुण सर्वांगीण प्रगति का मूल है,
कोरा आकृति से सुन्दर नर गन्धहीन ज्यों फूल है,
गुणी व्यक्ति आदर पाता, लगता सबको अनुकूल है,
नहीं सुहाता वह नर जो करता पग–पग पर भूल है,
सद्गुण को स्वीकार करें, यह ऋषियों का आह्वान है।।1।।

सत्य–समन्वयपरक दृष्टि हो,विकसे सब में एकता,
निष्ठा निज कर्त्तव्य भाव में, स्वालम्बन अरु मित्रता,
सहअस्तित्व–अभय–अनुसशासन, करुणा है सुख की लता,
प्रामाणिकता बढ़े धैर्य गुण, सम्प्रदाय निरपेक्षता,
अनासक्ति–संतुलन मानसिक, यह जीवन विज्ञान है।।2।।

हितकारी यह शिक्षा तुलसी–महाप्रज्ञ की शोध है,
मानवीय मूल्यों का मंगलकारी मिलता बोध है,
जो अपनाता है इसको, मिटते पथ के अवरोध हैं,
बन जाता है पूज्य मनुज वह, होता नहीं विरोध है,
'विजय' सुपथ पर चलने से जीवन बनता वरदान है।।3।।

लय :– रखनी है यदि लाज आज निज भारत माँ के शान की

*जीवन विज्ञान की ग्यारहवीं इकाई मूल्य बोध के संदर्भ में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

***अहिंसा भगवती की हम पूजा करें,**
हम पूजा करें, सफलता को वरें।।स्थायीपद।।

अहिंसा का मार्ग उत्तम, किन्तु पालन है कठिनतम,
है जरूरी वृत्ति संयम, संभलकर नित जीवन में हम पग धरें
।।1।।

विश्व को परिवार मानें, आत्मवत् पर पीर जानें,
बात अपनी नहीं तानें, स्रोत करुणा का उर से हरदम झरें
।।2।।

नहीं कोई भी पराया, क्रूरता की मिटे माया,
प्रेम तरु की मिले छाया, सुजनता के भावों से मन को भरें
।।3।।

चलें कांटों में भले हम, फूल बनकर नित खिलें हम,
दीप बन तम में जलें हम, हर कसौटी पर 'विजय' उतरें खरे।
।4।।

लय :– कितनी खूबसूरत हो.....

*जीवन विज्ञान की बारहवीं इकाई अहिंसा के संदर्भ में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वरदान ज़िन्दगी है, ये संत बताएं,
मानो या तुम न मानो, इच्छा है यह तुम्हारी,
भीतर की गन्दगी को, तुम दूर हटा दो,
है पास में खजाना, क्यों रहते बन भिखारी।।
।।स्थायीपद।।

अनमोल घड़ी कुछ करने की,
बैठे क्यों सिर पर हाथ धरे,
संकल्पी नर बढ़ता आगे,
आशंकाओं से नहीं डरे।।1।।

अभिशाप समझकर कर्मों का,
गमगीन बने क्येां जीवन में,
निशि बाद प्रभात सदा होता,
आश्वस्त रहो अपने मन में।।2।।

पौरुष करने वाले मानव,
मंजिल पे ध्वज फहराते हैं,
वे 'विजय' एक दिन दुनिया में,
अपना इतिहास बनाते हैं।।3।।

लय :– ये रात भीगी–भीगी, ये मस्त हवाएं.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जग के स्वार्थ भरे नाते, संत जन सबको समझाते,
तूं ही विश्वास मेरा, ओ जिनवरा!
न कोई सच्चा सुख पाते, मूढ़ जन फिर भी भरमाते,
तूं ही उल्लास मेरा, ओ जिनवरा!।।स्थायीपद।।

ओ... करते हैं मीठी बात, भीतर से करते हैं घात,
साफ है यह उजाले ज्यों, न कोई से अज्ञात।।1।।

ओ... ऊपर की है मनुहार, नहीं होता है सच्चा प्यार,
दोष क्या दें जमाने को,चलता ऐसा व्यवहार।।2।।

ओ...जिसको है निज पहचान, स्वयं का कर लेता कल्याण,
एक दिन मंज़िल पाता है, मिटते सारे व्यवधान।।3।।

ओ... सच को लेता जो जान, वीतराग का धरता ध्यान,
वह 'विजय' अंधेरे में, बनता है ज्योति समान।।4।।

लय :– जब कोई बात बिगड़ जाये.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

युवा दम्पती! निज जीवन में धार्मिकता को अपनाना,
सत्संस्कारों को विकसाना।।

।।स्थायीपद।।

जीवन है अनमोल धरोहर पुण्योदय से है पाया,
सच्चे धर्म–देव–सद्गुरु का, मंगलकारी है साया,
मिली विरासत भाग्य योग से, कीमत भूल नहीं जाना।।1।।

बिना आँख के सही मार्ग मानव को नजर नहीं आता,
तात्त्विक ज्ञान बिना वैसे ही अन्तर् तिमिर न मिट पाता,
क्रिया पक्ष भी बहुत जरूरी, सद्गुरु का है फरमाना।।2।।

माता और पिता दोनों ही होते हैं दृढ़ संस्कारी,
हंसती खिलती मिलती हरदम बच्चों की वहाँ फुलवारी,
भावी पीढ़ी के खातिर बदलाव स्वयं में है लाना।।3।।

सामूहिक जीवन में मिलजुल एक साथ रहना सीखें,
हो चाहे प्रतिकूल परिस्थिति समता से रहना सीखें,
सहनशीलता और धैर्य से हर उलझन को सुलझाना।।4।।

व्यसनमुक्त हो जीवन, पल–पल सावधान होकर रहना,
हम जैनी हैं, तेरापंथी युग प्रवाह में नहिं बहना,
जीवन शैली स्वस्थ बनाकर पग–पग 'विजय' सदा पाना।।5।।

लय : बस्ती–बस्ती पर्वत–पर्वत गाता जाये बनजारा.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बिना श्रम के जिन्दगी में, सफलता मिल नहीं सकती,
नीर सींचे बिना बगिया, कभी भी खिल नहीं सकती।।
।।स्थायीपद।।

धूप है तो कभी छाया, ज़िन्दगी की कथा ऐसी,
राह ऊँची कहीं नीची, सदा चलती न इक जैसी,
बिना संकल्प के राही! आपदा टल नहीं सकती।।1।।

स्वप्न लेते रहो चाहे, कुछ नहीं है यहाँ होना,
नहीं पुरुषार्थ है जिन्दा, भार केवल यहाँ ढोना,
तेल यदि हो गया खाली, ज्योत है जल नहीं सकती।।2।।

'विजय' आलस्य में अनमोल अवसर जो गंवाता है,
प्राण लेकर हथेली पे, जिसे चलना न आता है,
भावनाएँ वहाँ नर की, कभी भी फल नहीं सकती।।3।।

लय :– मुझे तुमसे मोहब्बत है, मगर मैं कह नहीं सकता.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कुछ सोच, अरे राही!
यह जीवन सचमुच रैन बसेरा।।स्थायीपद।।

द्वार–द्वार पर ठोकर खाते मानव जीवन पाया है,
सुख–सुविधाएँ पास बहुत हैं, सुन्दर तेरी काया है,
ओस बूंद ज्यों अस्थिर हैं सब, क्यों इनमें भरमाया है,
एक दिवस उठ जायेगा दुनिया से तेरा डेरा।।1।।

जिस जग को तू स्वर्ग समझता है वह झूठा मेला,
सम्बन्धों को कायम रखने कितना यहाँ झमेला,
मगर याद रख जाना होगा इक दिन तुझे अकेला,
परभव की यात्रा में कोई साथ न देगा तेरा।।2।।

जो आता है वह जाता है, जीवन है जल की धारा,
नाम अमर करने की धुन में फिरता क्यों मारा–मारा,
कौन चमक पाया इस जग में बन करके ध्रुव तारा,
फिर क्यों पागल की ज्यों करता है तू मेरा–मेरा।।3।।

जो सोता है वह खोता है संतों की यह शिक्षा है,
प्रगतिशील मानव औरों की करता नहीं प्रतीक्षा है,
संभल–संभलकर चलना प्यारे! जीवन एक परीक्षा है,
'विजय' 'उदित' होगा जीवन में तब ही नया सबेरा।।4।।

लय : चल, उड़ जा रे पंछी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उड़ान–

खिली जो फिजां लग रही प्यारी–प्यारी,
वही एक दिन झुलस जायेगी सारी।।
मीत! हवाई इन सपनों पे क्यों तूं यों लुभाता है,
प्राणों के रथ का पता क्या किस पलक रुक जाता है।।
रुक जाता है–2, रुक जाता है–2।।स्थायीपद।।

सोचता है सपनों में मुझको राज्य मिल जाये,
बगीचा मुरझा गया मेरा दुबारा खिल जाये,
सुरग की देवांगना सेवा में मेरे आ जाये,
मधुर–मधुर गीतों से मेरे मन को बहलाये,
बैठ के विमान में जगत् की सैर मैं करलूँ,
ऋद्धियों–समृद्धियों से अपना कोश मैं भरलूँ,
कल्पना के पंखों पर मन उड़ान भरता है,–2
याद रख जमीं को तूं पग जहां पै धरता है,–2
कहते ज्ञानी–2 माटी का महल टिक न पाता है,
जिन्दगी के सत्य को क्यों मूढ़ बन भुलाता है, प्राणों के...।।1।।

बोलता अजीज जिसको देख चेहरा खिलता है,
खोल देता भेद सारा स्वार्थ को कुचलता है,
मानता है जिसकी मूरत हृदय में समाई है,
मौत का पैगाम आते हुई बस विदाई है,
नजर पड़ते बदल जाता जहां का नजारा था,
काम कर देता भला जिसका तनिक इशारा था,
शूरवीरों की यहां देती चिता दिखाई है,–2
प्रियजनों की एक रोज सुनिश्चित जुदाई है,–2
मान कथन तूं–2 माया में पड़के क्यों धोखा खाता है,
जो फंसा है चक्र में वह निकलने न पाता है, प्राणों के....।।2।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

फूलता क्यों सफलता पै, विफलता पै रोता है,
बदलती स्थितियां यहां क्यों संतुलन तूं खोता है,
लाभ और अलाभ दोनों साथ–साथ चलते हैं,
समझदारी है इसी में जो यहां संभलते हैं,
दुःख के ही साथ में सुख का विधान होता है,
कांटे तो लगेंगे तूं चाहे फूल बोता है,
विरोधी युगलों भरी हम सबकी जिन्दगानी है,–2
केवल उजालों से भरी कोई नहीं कहानी है,–2
सीख 'विजय' की–2 समता में जो समय को बिताता है,
जीतकर जीवन समर मंगल सदा मनाता है, प्राणों के..... ।।3।।

लय :– आज जवानी पर इतराने वाले.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

31.

मैं शीश झुकाता हूँ, मुझे नाथ! निहारो तुम,
मैं द्वार तेरे आया, तकदीर संवारो तुम,
मुझे नाथ..... ।।स्थायीपद।।

संसार के सागर में, मेरी नाव डगमगाये,
है काल बहुत बीता, नहीं तीर नजर आये,
अवसर है आ गया अब, भव पार उतारो तुम,
मुझे नाथ..... ।।1।।

रंग रूप में मन खोया, अपने को न पहचाना,
छूटेगा एक दिन वो अपना था जिसे माना,
माया में मैं फंसा हूँ, अब नाथ! उबारो तुम,
मुझे नाथ..... ।।2।।

मतलब के सारे नाते, दिल को कहां लगाऊँ,
भगवन्! तेरे चरणों में, आनन्द सदा पाऊँ,
तेरा 'विजय' भरोसा, बिगड़ी को सुधारो तुम,
मुझे नाथ..... ।।3।।

लय :– तस्वीर बनाता हूँ, तस्वीर नहीं बनती.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

32.

जिन्दगी उपचार बनकर रह गई,
जीत भी यहां हार बनकर रह गई।।
।।स्थायीपद।।

जोड़ने या तोड़ने में लग रहे,
मात्र यह व्यापार बनकर रह गई।।1।।

शोक, चिन्ता, वेदना में जी रहे,
जिन्दगी यह भार बनकर रह गई।।2।।

कल्पना की दौड़ में सब हैं लगे,
स्वप्न का संसार बनकर रह गई।।3।।

सम्पदा जो पास में थी खो गई,
जिन्दगी बेकार बनकर रह गई।।4।।

अन्त तक भी 'विजय' करना शेष था,
व्यर्थ वह विस्तार बनकर रह गई।।5।।

लय :– दिल के अरमां आंसुओं में बह गए.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

33.

मनुज अवतार पा तूंने, कमाया क्या अरे सोचो,
कदम परमार्थ के पथ पर, बढ़ाया क्या अरे सोचो।।
।।स्थायीपद।।

किया परिवार का पोषण, खिलाया खूब इस तन को,
आत्म हित साधने कुछ भी बनाया, क्या अरे सोचो।।1।।

अमित बल–बुद्धि पाकर भी किया उपयोग क्या उसका,
समय अपना भलाई में लगाया, क्या अरे सोचो।।2।।

खजाने को भरा धन से रात दिन एक कर तूं ने,
प्राप्ति की होड़ में कितना गमाया, क्या अरे सोचो।।3।।

बाहरी गन्दगी तुझको सुहाती है न थोड़ी भी,
मलिनता चित्त में है जो मिटाया, क्या अरे सोचो।।4।।

''विजय'' जीवन बना ऐसा जगत् ले प्रेरणा तुझसे,
ज्ञान का दीप भीतर में जलाया, क्या अरे सोचो।।5।।

लय :– मेरा दिल तोड़ने वाले.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

34.

मन मोरे सुन जरा,
सोच, धर्म है कितना उतरा।।स्थायीपद।।

अपने को ही ज्ञानी माने, सबसे ऊँचा दानी माने,
बीता जीवन सारा।।1।।

पर को दोषी है ठहराता, अपने को सच्चा बतलाता,
हो कैसे निस्तारा।।2।।

भीतर की आवाज भुलाता, बाहर ही बस दौड़ लगाता,
छाया है अंधियारा।।3।।

'विजय' स्वयं का बोध जगाओ, पर गुण सुनकर मोद मनाओ,
टूटे बन्धन कारा।।4।।

लय :– शास्त्रीय

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

35.

मान जा मेरे मन, छोड़दे बद्चलन,
सत्य को पायेगा।।स्थायीपद।।

कितने लम्बे समय से मनुज तन मिला,
पिछले पुण्यों से जीवन का उपवन खिला,
धर्म वीणा बजा, गुण फूलों को सजा, बाग महकायेगा।।1।।

तूं ही साथी है सच्चा वफादार है,
तेरे बिन कौन दूजा यहां यार है,
साथ क्यों छोड़ता, बाहर क्यों दौड़ता, हाथ क्या आयेगा।।2।।

वक्त रहते अगर तूं जगेगा नहीं,
अच्छे कामों में जब तक लगेगा नहीं,
नीर बह जायेगा, दीप बुझ जायेगा, फिर तूं पछतायेगा।।3।।

दूसरों को ही दोषी रहा मानता,
सत्य अपनी ही बातों में है तानता,
दृष्टि को कुछ बदल, न्याय–नीति पे चल, जीवन सरसायेगा।।4।।

तेरे भीतर 'विजय' दिव्य संसार है,
बहती अमृत की तेरे में रसधार है,
चेतना को जगा, ध्यान में मन लगा, साध्य मिल जायेगा।।5।।

लय :– छोड़ बाबुल का घर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

36.

सकल जगत् में कहीं न मुझको सच्चा प्यार मिला।
जहां कहीं भी नजर गई केवल उपचार मिला।।
।।स्थायीपद।।

कल तक जो मुझको कहते थे हम सब हैं तेरे,
देख रहा हूँ आज बने वे ही दुश्मन मेरे,
लुप्त हो रही मानवता बस नर आकार मिला।।1।।

पैसे से है प्यार मनुज को, नहिं कीमत नर की,
चिन्ता रहती सबको केवल अपने ही घर की,
प्रेम जगत् में भी मुझको चलता व्यापार मिला।।2।।

मुस्कानों का नकलीपन भी मैंने जान लिया,
जीवन के असली स्वरूप को भी पहचान लिया,
कृत्रिमता के इस दरिये का कहीं न पार मिला।।3।।

सुत–दारा अरु भाई–भगिनी कौन यहां अपना,
जिसको कहता था अति सुन्दर वह जग है सपना,
कहीं नहीं आत्मीय भाव, केवल व्यवहार मिला।।4।।

रे मन! रहता मृगतृष्णा में क्यों भरमाया है,
स्वार्थपरक सम्बन्धों में तूं क्यों ललचाया है,
'विजय' हार का सौदा यह अनुभव हर बार मिला।।5।।

लय :– जाने वे कैसे लोग थे जिनको.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

37.

जाग उठो, ओ युवा बन्धुओं! कुछ करके दिखलाना है,
छिपी शक्तियों पर आया, वह पर्दा दूर हटाना है।।
जाग जाओ–2 जाग जाओ–2।।स्थायीपद।।

बिजली से भी बढ़कर ताकत भरी तुम्हारी बाहों में,
बाधाएँ नहिं टिक सकती है कभी तुम्हारी राहों में,
है कोई भी कार्य न ऐसा करना जिसे असंभव है,
जो होता है पात्र उसे मिलता धरती का वैभव है,
नया सृजन करने समाज में सोया शौर्य जगाना है।।1।।

है न अवस्था यह जीवन में आँख मूंदकर सोने की,
विषय– सुखों में ही अपने भीतर की ऊर्जा खोने की,
पहली बार विफलता पाकर के निराश हो रोने की,
नहीं जरूरत भार तनावों का जीवन में ढोने की,
कर्मशील बनकर भावी जीवन का महल सजाना है।।2।।

जहाँ कहीं भी देखो चाहे, है आक्रोश नजर आता,
जन– जीवन पर चिंताओं का मानो बादल मंडराता,
भौतिकता की तेज दौड़ में, मानव भागा जाता है,
प्रवाहपाती होकर जीवन का सर्वस्व लुटाता है,
प्रतिस्रोत में कदम बढ़ाने का व्रत अब अपनाना है।।3।।

सच्चाई पर चलने का अब से युवकों! संकल्प करो,
न्याय मार्ग पर डटे रहो, पथ बाधाओं से नहीं डरो,
पड़े परीक्षा देनी तुझको, उसमें सदा खरे उतरो,
साहस का ले अभिनव संबल पग–पग पर तुम 'विजय' वरो,
दूर हटा अज्ञान तिमिर को नया सबेरा लाना है।।4।।
लय :– आओ बच्चों! तुम्हें दिखाएं झांकी हिन्दुस्तान की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

38.

माया नगरी में बनकर दीवाना,
चलता है क्यों तूं इतना अकड़ के।।
।।स्थायीपद।।

जिसको कहता है मानव तूं अपना,
वह तो सचमुच भिखारी का सपना,
छूट जायेंगे रिश्ते सभी ये,
रखना चाहता है जिनको पकड़ के।।1।।

तेरा चन्द दिनों का है जीवन,
बांट सबमें तूं खुशियों का धन,
इन ही लोगों में तुझको है रहना,
क्यों तूं दुश्मन बनाता झगड़ के।।2।।

बातें बढ़ चढ़ के यों तो बनाते,
अपने को कम नहीं हैं बताते,
मौत की बात सुनते ही देखा,
कायरों की ज्यों दिल उनका धड़के।।3।।

धर्म जीवन का उत्तम खजाना,
सीख संतों की मत तूं भुलाना,
है 'विजय' भय न सच्चे मनुज को,
चाहे अम्बर में बिजली भी कड़के।।4।।

लय :– मेरे सांवले सलोने कन्हैया.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आशा का गगन, सपनों का चमन,
कोई इस पर कैसे चले,
चाहे जितना बढ़े, दूरी न घटे,
कहीं ओर न छोर मिले,
कोई इस पर कैसे चले।।स्थायीपद।।

कोई कितनी ही दौड़ लगाये, आखिर तो उसे गिरना है,
यह कूप है ऐसा अंधा, संभव न इसे भरना है,
इच्छाएं प्रबल, पथ है मुश्किल,
चाहता नर पर न फले, चाहे.....।।1।।

नर का चाहा नहीं होता, जीवन भर दौड़ लगाता,
बढ़ना चाहता है मानव, पर अन्त पराजय पाता,
मेहनत भी करे, पर घट न भरे,
मन को यह बात खले, चाहे.....।।2।।

अंधियारी इन राहों में, खो जाती है जिन्दगानी,
है 'विजय' एक दिन आता, बह जाता सारा पानी,
दूभर जीवन, लगता बन्धन,
चिन्ता की चिता में जले, चाहे.....।।3।।

लय :– आ चल के तुझे, मैं ले के चलूँ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सुनो लगाकर ध्यान, सुगुरु की वाणी,
होती सुधा समान, सुगुरु की वाणी।।
।।स्थायीपद।।

गुरु वाणी है जीवन नौका,
भाग्यवान को मिलता मौका,
है अनमोल निधान, सुगुरु.....।।1।।

मंगलमय चिन्तन है होता,
पाता सब कुछ जो नर खोता,
है सचमुच वरदान, सुगुरु.....।।2।।

गुण पर अपनी नजर टिकाओ,
बुरी वृत्तियों को दफनाओ,
दूर करे अज्ञान, सुगुरु.....।।3।।

न्याय–नीति पर कदम बढ़ाओ,
भ्रान्त जनों को सुपथ दिखाओ,
सर्वोदय अभियान, सुगुरु.....।।4।।

अच्छा सोचो, अच्छा बोलो,
प्रेम रंग सबमें तुम घोलो,
पाओ 'विजय' महान्, सुगुरु.....।।5।।

लय :– भजले प्रभु का नाम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

देखता हालत दुनिया की तो मन सोचता है,
कहीं पर सुख है नहीं—3।।

।।स्थायीपद।।

अपना माना था वही पल में बदल जाता है,
घृणा है मन में प्यार ऊपर से दिखाता है,
है न सच्चाई यहाँ, कुछ नहीं स्थायी यहाँ, कहीं पर.....।।1।।

जग के नाते ये स्वार्थों से सने होते हैं,
मूढ़ नर इनमें नहीं मालूम क्यों खोते हैं,
ज्ञानियों ने जो कही, बात है सारी सही, कहीं पर.....।।2।।

धन की गर्मी से रिश्ते भी गरम रहते हैं,
पास नहीं पैसा जिनके वे व्यंग्य सहते हैं,
व्यर्थ ही नर फूलता, न्याय पथ को भूलता, कहीं पर.....।।3।।

मस्त हो जीने की शिक्षा धर्म देता है,
मोह ममता में न फंसता वह नर विजेता है,
है 'विजय' चाहता सदा, दुःख हो जग से विदा, कहीं पर.....।।4।।

लय :— जरा सी आहट होती है

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सपने सब किसके फले, कोई भी हो क्यों ना भले,
मौत आती है इक दिन, रोब इस पर ना चले।।
।।स्थायीपद।।

मन में अरमान मचलते, निधियों से मैं अपना घर भरूँ,
जिन्दगी में श्रम से, अपना नाम अमर मैं करूँ,
भाग्य में जो लिखा है, नर को उतना ही मिले।।1।।

बनते और बिखरते, कल्पनाओं के गढ़ है यहाँ,
शोक–चिन्ता में खोया रहता, हरदम सारा जहाँ,
आशा और निराशा में ही उमरिया ढले।।2।।

सुख को पाने 'विजय' जन दौड़े पर सुख है कहाँ,
लोभ नागिन है जहाँ, समझो निश्चित दुःख है वहाँ,
मोहनी यह माया, सबके मन को छले।।3।।

लय :– जलते हैं जिसके लिए

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ना छोड़े, ना छोड़े, ना छोड़े रे,
अपनी पकड़ ना छोड़े रे मनवा।।
।।स्थायीपद।।

थोड़ा है ज्ञान भ्रम होने का ज्यादा,
फिरता है ओढ़े ज्ञानियों का लबादा,
वो तो अम्बर के तारे तोड़े रे।।1।।

अभिमान के पालने में यह झूले,
कल्पित कहानी बनाके यह फूले,
सुनता कहना न, आगे दौड़े रे।।2।।

मन का ही मानव को सच्चा सहारा,
गहन तिमिर में यह करता उजारा,
अपने को यह तनिक जो मोड़े रे।।3।।

मिट जाये इसकी 'विजय' जो चपलता,
फिर तो है निश्चित जीवन में सफलता,
दिव्य विभुता से निज को जोड़े रे।।4।।

लय :– ना बोले–3 रे, घूंघट के पट ना खोले रे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ज्योति बन कर सदा जलना,
धर्म सबको सिखाता है,
सभी से मित्र बन मिलना,
धर्म सबको सिखाता है।।
।।स्थायीपद।।

बांटता प्रेम का वैभव,
देवता तुल्य वह मानव,
सदा संघर्ष से टलना,
धर्म सबको सिखाता है।।1।।

गुणों की गन्ध फैलाता,
विषमता जो नहीं लाता,
फूल बनकर सदा खिलना,
धर्म सबको सिखाता है।।2।।

रहे संकल्प पर अविचल,
नहीं पथ में रुके इक पल,
न्याय के मार्ग पर चलना,
धर्म सबको सिखाता है।।3।।

दूसरों का न मुँह ताके,
स्वयं की शक्ति को आंके,
कल्पतरु ज्यों 'विजय' फलना,
धर्म सबको सिखाता है।।4।।

लय :– जगत् रूठे तो रूठन दो

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मतलबी ये नाते, भरमाते, जन दुःख पाते हैं,
जानते फिर भी अनजान हैं,
नहीं भले–बुरे का ज्ञान है,
हंसते हैं ज्ञानीऽऽऽ, मतलबी..... ।।स्थायीपद।।

अपना यहाँ कोई नहीं है जीवन साथी,
मायावी दुनिया विविध रंग दिखलाती,
सच्चा मीत नहीं, सच्ची प्रीत नहीं,
हंसते हैं ज्ञानीऽऽऽ, मतलबी..... ।।1।।

चलता सदा झूठ का है व्यापार यहाँ,
रखते नहीं याद किसी का उपकार यहाँ,
बिछे जाल यहाँ, देखें चाहे जहाँ,
हंसते हैं ज्ञानीऽऽऽ, मतलबी..... ।।2।।

मुस्कानें नकली यहाँ पर हैं होती,
मिलते बड़ी मुश्किल से असली मोती,
पथ है कांटों भरा, सोचो–समझो जरा,
हंसते हैं ज्ञानीऽऽऽ, मतलबी..... ।।3।।

प्रभुवर को अपने हृदय में बिठाले तूं,
'विजय' कहे चिन्मय दीप जलाले तूं,
नैया पार लगे, तेरा भाग्य जगे,
हंसते हैं ज्ञानीऽऽऽ, मतलबी..... ।।4।।

लय :– अजनबी तुम जाने–पहचाने से लगते हो....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

होठों पर तेरे राम नाम, पर भीतर में जलती ज्वाला,
मन तो माया में फंसा हुआ, हाथों में रहती है माला।।
।।स्थायीपद।।

प्रातः उठकर के प्रभुवर का तूं पाठ हमेशा करता है,
पर प्रभु के निर्देशों का लंघन करते तनिक न डरता है,
कैसे रीझेंगे परमात्मा जब चित्त तुम्हारा है काला।।1।।

औरों की बढ़ती–चढ़ती लखकर मन ही मन तूं जलता है,
कृत्रिमता जीवन में ज्यादा नहीं सच्चा प्रेम झलकता है,
असली चाबी है पास नहीं, कैसे खुल पायेगा ताला।।2।।

आशा पिशाचिनी के वश हो, कितने अभिनय दिखलाता है,
नहीं जायेगा तिनका संग में,यह ख्याल न मन में आता है,
करते अन्याय न सकुचाता तूं होकर मोह में मतवाला।।3।।

प्रभु की वाणी पर चलने का संकल्प 'विजय' जो लेता है,
देते प्रभु आशीर्वाद उसे वह बनता आत्म विजेता है,
नव निधियाँ रहती हैं तत्पर पहनाने उसको वरमाला।।4।।

लय :– दिल लूटने वाले जादूगर.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सांसों की वीणा का गूंजे सरगम,
जाना तज तन–धन जग का है अटल नियम,
तृण ज्यों हर नाता है, नर क्यों भरमाता है,
क्यों मनुज लुभाता है, प्रभु नाम भुलाता है,
लगती सुहानी है, आज जो कहानी है,
आज जो कहानी है वो पड़ती पुरानी है।।स्थायीपद।।

फूलों की खुशबू भी टिक नहीं पाती है,
जलती जो बाती इक दिन बुझ जाती है,
फीकी पड़ जाती है रौनक, नश्वर सुख सारे,
दो दिन की जवानी है, बह जाता पानी है,
बह जाता पानी है, दो दिन की जवानी है।।1।।

आशा ही आशा में अवसर नर खोता,
छोटे से जीवन में पाप बीज बोता,
जान रहा सच्चाई फिर भी आंख मूंद चलता,
यह दुनिया दिवानी है, कहते महाज्ञानी है,
कहते महाज्ञानी है, यह दुनिया दिवानी है।।2।।

संतों की शिक्षा को जीवन में जीलो,
अमृत रस धारा है जी भरकर पीलो,
चिन्ता और तनावों से छुटकारा मिल जाये,
'विजय' जिन्दगानी है, सुख से जो बितानी है,
सुख से जो बितानी है, 'विजय' जिन्दगानी है।।3।।

लय :– चाहा है तुझको चाहूंगा हरदम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गुरु को किया नमन कि मेरा दीप जल गया,
मन का खिला चमन –3 कि मेरा दीप जल गया।।
।।स्थायीपद।।

गुरु का है सब पर उपकार, गुरु हैं जन–जन के आधार,
अंधियारा जग में फैला, गुरु हैं तीन लोक में सार,
शुभ है सुगुरु शरण –3 कि मेरा दीप जल गया।।1।।

गुरु की अमृतमय वाणी, गुरु ही हैं सच्चे ज्ञानी,
दुनिया में नहीं है दूजा, गुरु की कर पाये सानी,
मिट जाये आवरण –3 कि मेरा दीप जल गया।।2।।

मेरे पर छाया अज्ञान, गुरु ने दिया चक्षु का दान,
अवरोधों से घिरा हुआ, गुरु ने दूर किये व्यवधान,
पावन है गुरु चरण –3 कि मेरा दीप जल गया।।3।।

गुरु के हरदम गुण गाऊँ, सोते–उठते मैं ध्याऊँ,
'विजय' सुगुरु के साये में, पग–पग पर मंगल पाऊँ,
नौका है भवतरण –3 कि मेरा दीप जल गया।।4।।

लय :– उनसे मिली नजर.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गुरुवर हैं उपकारी, जाएँ हम बलिहारी,
गुरु के गीत गाये, गुरु का नाम ध्यायें।।स्थायीपद।।

गुरु ब्रह्मा है, गुरु विष्णु है, गुरु सब देवों के देव हैं,
भ्रान्त पथिक को सद्गुरु ही पथ दिखलाते स्वयमेव है,
गुरु वाणी, कल्याणी, जुड़ जाए इकतारी, गुरु.....।।1।।

हैं स्वार्थ भरे जग के रिश्ते, गुरु का सच्चा सम्बन्ध है,
गुरु के चरणों में आने पर, हर पल मिलता आनन्द है,
गुरु ज्ञाता, सुख दाता, गुरु सच्चे अवतारी, गुरु.....।।2।।

करुणा से जिनका हृदय भरा सबका दुःख दर्द मिटाते है,
आश्वस्त सभी को करते हैं, जन–जन की प्यास बुझाते हैं,
चरणों में, गुरुवर के, झुकते सब नर नारी, गुरु.....।।3।।

'विजय' सुगुरु के वचनों पर नतमस्तक हो जायेंगे,
गुरु का इंगित जो भी होगा हम उस पर कदम बढ़ायेंगे।
गुरु होते, परम ज्ञानी, शासन के अधिकारी, गुरु.....।।4।।

लय :– मैं निकला गड्डी ले के .....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मंगल है गुरु नाम, गुरु की जय बोलो,
है सच्चा शिव धाम, गुरु की जय बोलो।।
।।स्थायीपद।।

नित उठ सबेरे जो गुरु को हैं ध्याते,
भटकाव से गुरु उनको बचाते।।1।।

गुरु ही ज्ञान का दीपक जलाते,
मझधार से नाव पार लगाते।।2।।

गुरु की शरण विघ्न–बाधा मिटाती,
अंधियारी राहों को रोशन बनाती।।3।।

नश्वर है दुनिया के सारे ही नाते,
गुरु ही सदा साथ सबका निभाते।।4।।

सुगुरु की महिमा है दुनिया से न्यारी,
जाते 'विजय' नाथ की बलिहारी।।5।।

लय :– गोविन्द बोलो, जय–जय गोपाल बोलो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ओ गुरुवर!वन्दन लो शत वार,
द्वार तुम्हारे लेकर आया श्रद्धा का उपहार।।
।।स्थायीपद।।

मन–मन्दिर में मूरत तेरी, विपदाएँ हरती है मेरी,
तूं ही प्राणाधार।।1।।

जीने का विज्ञान बताया, मुझको सच्चा पथ दिखलाया,
बहुत किया उपकार।।2।।

जहाँ नहीं है मेरा–तेरा, रहता हरदम जहाँ सबेरा,
दो वैसा संसार।।3।।

'विजय' वरूं मैं जीवन–रण में, पौरुष भर दो ऐसा मन में,
भाव करो साकार।।4।।

लय :– मधुकर! श्याम हमारे चोर.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गुरुवर के गीत मिलजुल गायें,
ध्यायें, गुरुवर की मूरत को।।स्थायीपद।।

सारी सम्पदा है समायी,
इनके चरणों में करे जन वन्दना,
लाखों आते, सुख पाते,
श्रद्धा फूलों से करते हैं अर्चना,
विपदाएँ दूर हट जाये,
जैसे बादल दल हवा की ज्यों।।1।।

वाणी इनकी सुनते जायें,
अमृत झरने की उपमा है सही,
मिलती सारी हैं घटनाएँ,
प्रवचनों में उन्होंने जो कही,
श्रद्धा से लोग अपनाएँ,
प्यारे गुरुवर के वचनों को।।2।।

जिन्दगानी है तूफानी,
गुरु की करुणा ही शीतल बयार है,
मंगलकारी, मूरत प्यारी,
सबके खातिर खुला यह द्वार है,
है यही भावना 'विजय' की,
गुरुवर! नैया को थाम लो।।3।।

लय :– रिमझिम के गीत सावन गाये

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्री जिनशासन दीप बन, प्रकटे भिक्षु स्वाम,
जन–जन के मन में बसे, मंगलमय यह नाम।।1।।
।।गुरुओं का इतिहास।।

माँ दीपा बल्लू पिता, कण्टालिय शुभ ग्राम,
उस युग में गुरु भिक्षु ने, खोला नव आयाम।।2।।
।।गुरुओं का इतिहास।।

भिक्षु गणी के पाट पर, बैठे भारीमाल,
पिता किशन माँ धारणी, थे दूजे गणपाल।।3।।
।।गुरुओं का इतिहास।।

राय गणी तीजे हुए, तेरापंथ के नाथ,
मात कुशालां थी कुशल चतरोजी थे तात।।4।।
।।गुरुओं का इतिहास।।

रोयट के जय आर्य थे, चौथे गण श्रृंगार,
कल्लू–आईदान सुत, किया बहुत उपकार।।5।।
।।गुरुओं का इतिहास।।

पंचम मघ गणिवर हुए, बीदासर शुभ स्थान,
बन्ना माँ पूरण पिता, थे आचार्य महान्।।6।।
।।गुरुओं का इतिहास।।

जैपुर के छट्ठे हुए, सद्गुरु माणकलाल,
मात–तात छोटां–हुकुम की गण की संभाल।।7।।
।।गुरुओं का इतिहास।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संतों ने मिलकर चुना, सप्तम डालिमनाथ,
कनीरामजी थे पिता और जडावां मात।।8।।
।।गुरुओं का इतिहास।।

छापरवासी आठवें, गणिवर कालूराम,
मूलचन्दजी तात थे, माँ छोगाजी नाम।।9।।
।।गुरुओं का इतिहास।।

नवमें गुरु तुलसी हुए, शासन के सिरमौर,
माँ वदना, झूमर पिता, चला प्रगति का दौर।।10।।
।।गुरुओं का इतिहास।।

दसवें गुरु प्रज्ञाधनी, महाप्रज्ञ महाभाग,
माँ बालू, तोला पिता, शोभे गण का बाग।।11।।
।।गुरुओं का इतिहास।।

शासन के सरताज हैं, महाश्रमण महाधीर,
नेमां माँ झूमर पिता, सागर ज्यों गंभीर।।12।।
।।गुरुओं का इतिहास।।

विनय और वात्सल्यमय है जिनका व्यवहार,
पापमीरु निर्मलमना, शासन के आधार।।13।।
।।गुरुओं का इतिहास।।

ये ग्यारह आचार्य हैं, तेरापंथ सरताज,
सबका अति उपकार है, 'विजय' हमे है नाज।।4।।
।।गुरुओं का इतिहास।।

लय : सामान्य छन्द

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भिक्षु का नाम प्यारा, विश्व का है उजारा,
ध्यान जिसने लगाया, उसे प्रभु ने उबारा, भिक्षु का.....
।।स्थायीपद।।

सत्य के पक्षपाती, भ्रान्तियों को मिटाया,
अंधेरी रात में ज्यों ज्ञान दीपक जलाया,
भिक्षु के त्याग तप का, देखते हैं नजारा।।1।।

विरोधी शक्तियों ने, शूल कांटे बिछाये,
वज्र संकल्प प्रभु का, चरण रुकने न पाये,
प्रबल व्यक्तित्व था वह, कभी भी था न हारा।।12।।

आँख में रूप है वह, पर न साक्षात् होता,
कल्पनाओं में कब तक, लगायें नाथ! गोता,
दरश दे दो प्रभो! अब, भक्ति से है पुकारा।।3।।

'विजय' जो पथ दिखाया, बढ़ें उस पर सदा हम,
भटकना बन्द करके, वरें सुख सम्पदा हम,
नांव मझधार में है, दिखादो अब किनारा।।4।।

लय :– चांद आहें भरेगा, फूल दिल थाम लेंगे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

55

सिरियारी का संत महान्, ओम् जय भिक्षु भिक्षु अभिधान।
नित उठकर हम ध्यायें ध्यान, मिट जाये सारे व्यवधान।।
।।स्थायीपद।।

फैला था जब तिमिर वितान, बन आया वह सूर्य समान,
रूढ धर्म में फूंके प्राण, किया सत्य खातिर बलिदान।।1।।

पहला स्थान मिला श्मशान, उठे विरोधों के तूफान,
गुरु का शाप बना वरदान, तेरापंथ की फैली शान।।2।।

सहा क्षमा से हर अपमान, अमृत मान किया विषपान,
किया अभय होकर आह्वान, मिटने लगा स्वतः अज्ञान।।3।।

वल्लूसुत का यह अवदान, याद रखेगा सकल जहान,
श्रद्धा से गायें संगान, पग–पग 'विजय' वरें कल्याण।।4।।

लय :– रघुपति राघव राजा राम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बाबै भीखण की जग में, महिमा है भारी,
सुमिरण दिल से जो करते, उनकी है नैया तारी।।
।।स्थायीपद।।

घोर अन्धकार में वह दीप बनकर था आया,
रूढ़ियों को ललकारा, क्रान्ति का बिगुल बजाया,
चिहुं दिशि में फैली थी, गहनतम ज्यों निराशा,
वीर भिक्षु तब आये, बंधायी सबको आशा,
जगत् का भाग्य फला, राजपथ मानो मिला,
खिली गण की फुलवारी, उनकी.....।।1।।

शोभजी की बेड़ी को, पलक में तृण ज्यों तोड़ा,
घेरने आयी सेना, उसे नगरी से मोड़ा,
चमत्कारों की ऐसी, घटी अगणित घटनाएँ,
गूंजती है मुख–मुख पर, कहो क्या–क्या बतलाएँ,
सकल जन जान गये, उसको पहचान गये,
भिक्षु सच्चे उपकारी, उनकी.....।।2।।

त्याग–तप की ज्वाला में, स्वयं को था तपाया,
आगमों का कर मन्थन, सत्य को उसने पाया,
द्वेष करने वाले भी बने थे भक्त सारे,
संत यों हुए अनेकों, किन्तु भीखण हैं न्यारे,
'विजय' गुण गान करें, भिक्षु का ध्यान धरें,
सभी जाएं बलिहारी, उनकी.....।।3।।

लय :– थोड़ा सा प्यार हुआ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आँखों के सितारे मेरे सांवरिया,
भिक्षु–भिक्षु–भिक्षु रटे मेरा जिया,
श्रद्धा से पुकारे, वह तर गया ओ रे सांवरिया.....
।।स्थायीपद।।

ध्यान धरूं जब चित्र तुम्हारा भावों में आता है,
लगता प्यारा नाम तुम्हारा, सुन मन सुख पाता है,
तेरा ही सहारा, मैंने लिया।।1।।ओ रे सांवरिया.....

प्यास जगी है आश है तुमसे सपनों में तुम आओगे,
चरण मिलेंगे भाव फलेंगे, जीवन विकसाओगे,
भक्त हूँ तेरा, हठ है किया।।2।।ओ रे सांवरिया.....

नाम है सच्चा, काम बिगड़ता भी अच्छा बन जाता,
'विजय' तुम्हारी गौरव गाथा, सबको सदा सुनाता,
तन–मन सारा, तुम्हें दे दिया।।3।।ओ रे सांवरिया.....

लय :– तू ने ओ रंगीला कैसा जादू किया.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भिक्षु की गौरवमयी गाथा सदा गायें,
दिव्य मुद्रा को हृदय में हम सदा ध्यायें।।स्थायीपद।।

था तिमिर छाया हुआ, सद्ज्ञान का दीपक जलाया,
उस समय फैली हुई जन भ्रांतियों को था मिटाया,
थे प्रबल अवरोध पथ में, किन्तु कदमों को बढ़ाया,
वज्रसंकल्पी भिक्षु थे मार्ग निष्कण्टक बनाया,
बीज बोया आज बन वट वृक्ष लहराये।।1।।

वीर वचनों पर समर्पण भावना उनकी निराली,
डोलती जिन धर्म की पतवार, प्रभुवर ने संभाली,
सजग प्रहरी बन हटायी, घटाएँ घनघोर काली,
आज गौरव है सभी को देखते गण में दिवाली,
स्वस्थ जीवन जी रहे, आनन्द सब पायें।।2।।

साध्य–साधन शुद्धि का सिद्धान्त प्रभुवर ने दिया था,
शिष्य सारे एक गुरु के हो, नियम निर्मित किया था,
दूर्ग शिथिलाचार का इक दिन स्वतः ही ढह गया था,
साहसी बनकर सदा संघर्ष से लोहा लिया था,
ध्वज 'विजय' गुरु भिक्षु का चिंहु ओर फहराये।।3।।

लय :– एक दिन भी जी मगर इन्सान बनकर जी.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सोते–उठते, खाते–पीते होठों पर इक नाम,
प्यारा–प्यारा लगता है जय ओम् जय भिक्षु स्वाम,
विध्न हरण है मंगलकारी, नित उठ ध्यान लगाएं,
रोग–शोक संताप मिटाये, श्रद्धा बल जग जाये,
भिक्षु की जय बोलो–2 ।।स्थायीपद।।

रत्न प्रसूता दीपां माँ का जग है आभारी,
भागी सुत को जन्म दिया था अतिशय उपकारी,
सचमुच थी गुणवंती उसका गौरव हरदम गाएं,
अमर नाम कर दिया पुत्र ने यश सौरभ फैलाएं।।
भिक्षु की जय बोलो..... ।।1।।

शमशानों की छत्री में निर्भय हो वास किया,
अंधेरी ओरी में पहला वर्षावास किया,
कांटे बिछे हुए थे पथ में, फिर भी कदम बढ़ाये,
विचलित हुए न सत्य मार्ग से रुकने कभी न पाये।।
भिक्षु की जय बोलो..... ।।2।।

महासूर्य की दिव्य रश्मियां चिहुं दिशि में फैली,
भैक्षव दर्शन आज बन चुका है युग की शैली,
दशों दिशाओं में तेरापंथ का झण्डा फहरायें,
जन्म–जन्म के भाग्य फले हैं खुशियां 'विजय' मनायें।।
भिक्षु की जय बोलो..... ।।3।।

लय :– उड़ जा काले कावां.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वदनासुत तुलसी का हम गौरव गाते हैं,
चंदेरी नगरी का जग सुयश बढ़ाते हैं।।स्थायीपद।।

उतरा था देव विमान जब प्रभु ने जन्म लिया,
शुभ लक्षणमय तन था, माता को धन्य किया,
कुल खटेड़ सौभागी, जन–जन बतलाते हैं।।1।।

लघुवय में दीक्षित हो जीवन को चमकाया,
गुरु कालू का सिर पर शुभ वरद हस्त पाया,
अत्यल्प समय में वे गण में छा जाते हैं।।2।।

बावीस वर्ष में ही गुरु पद को संभाला,
सबको संतोष मिला, ज्यों पिया अमृत प्याला,
बनकर के अनुशास्ता दायित्व निभाते हैं।।3।।

गंगाणे की भू पर प्राणों का त्याग किया,
सूरज सम तेजस्वी जीवन था 'विजय' जिया,
प्रभु के उपकारों को, हम नहीं भुलाते हैं।।4।।

लय :– जब कोई नहीं आता मेरे बाबा आते हैं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रज्ञा के अवतार परम गुरु महाप्रज्ञ को नमन हमारा,
ज्योतिर्मय उस महापुरुष के प्रति श्रद्धानत है जग सारा।।
।।स्थायीपद।।

सरस्वती का वरद पुत्र वह ज्ञान अतीन्द्रिय से था शोभित,
अद्भुत थी प्रवचन शैली व्यक्तित्व निराला जन–मनमोहित,
नौ दशकों तक दिग्–दिगन्त में चमका बनकर के ध्रुवतारा।।1।।

दीक्षा लेते ही मुनि नथ ने पाया था तुलसी का साया,
कहा, बनोगे मेरे जैसा, जीवन भर तादात्म्य निभाया,
अंकुर बना कल्पवृक्ष वह पूजित विज्ञजनों के द्वारा।।2।।

प्रेक्षा ध्यान प्रणाली द्वारा जन जीवन को धन्य बनाया,
जो भी आया पूज्य चरण में उसका सोया भाग्य जगाया,
करुणाशील हृदय सद्गुरु का सबको हरदम दिया सहारा।।3।।

पुण्य पुरुष के अवदानों की सचमुच ही है अकथ कहानी,
उसकी अगणित विशेषताएँ जन–जन के हैं आज जुबानी,
अस्त हो गया भले सूर्य वह विद्यमान अब भी उजियारा।।4।।

लय :– सुनो सुनो ए दुनिया वालों .....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

युगप्रधान आचार्यप्रवर को नमन करें,
उनके दिलखाए पथ का हम जीवन में अनुगमन करें।।
।।स्थायीपद।।

धन्य हुई थी धरती बालूनन्दन का पाकर साया,
मन का तन का ताप मिटाती थी सुरतरुवर की छाया,
नयन पुतलियों में ज्योतिर्मय बन उतरें।।1।।

पत्थर में भी प्राण फूंक दे ऐसी प्रभु की वाणी थी,
गरिमामय व्यक्तित्व देव का जग में और न सानी थी,
भूल न पाये उपकारों को सदा स्मरें।।2।।

बड़े विलक्षण योगी थे नित अपने भीतर रहते थे,
राधाकृष्णन और विवेकानन्द सुधीजन कहते थे,
ज्ञानसूर्य से ज्योति प्राप्त कर तिमिर हरें।।3।।

समाधान देते थे सबको प्रेक्षा पद्धति के द्वारा,
लाखों–लाखों लोगों ने बदली निज जीवन की धारा,
प्रभु के दिलखाए पथ पर हम चरण धरें।।4।।

सागर सम है प्रभु की गाथा शब्दों में कैसे गाएं,
मंगलकारी मुख मुद्रा को सोते–उठते नित ध्यायें,
दिव्य पुरुष का पा आशीर्वर 'विजय' वरें।।5।।

लय :– आने वाले कल की तुम तस्वीर हो

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महाप्रज्ञ गुरुराज न भूले जायें,
थे गण के ऋतुराज सभी गुण गायें।।
।।स्थायी पद।।

भैक्षव शासन को विकसाया,
तुलसी का दायित्व निभाया,
है असीम उपकार याद नित आये।।1।।

ज्ञानी, ध्यानी, अनुसन्धानी,
अवदानों की अकथ कहानी,
शब्दों में आकार न हम दे पायें।।2।।

गुरु से सीखें विनय–समर्पण,
योगनिष्ठ अद्भुत था जीवन,
अनुपम था आदर्श सभी अपनायें।।3।।

अगणित उपमाओं से उपमित,
ज्ञान अतीन्द्रिय ज्यों था विकसित,
था विशाल व्यक्तित्व सभी को भायें।।4।।

सहसा किया स्वर्ग आरोहण,
सुन संवाद स्तब्ध था जन–जन,
भावी है बलवान्, शास्त्र बतलाये।।5।।

महाश्रमण अब हैं खेवैया,
उनके हाथों में है नैया,
'विजय' करें आश्वस्त, संघ विकसाये।।6।।

लय :– भजले प्रभु का नाम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ऊगा स्वर्णिम दिन आज, हम मंगल गाएं।
महाश्रमण बने गणताज, हम मंगल गाएं।।
।।स्थायीपद।।

दशों दिशाओं में है पुलकन,
प्रमुदित है धरती का कण–कण,
गूंजे जय–जय आवाज, हम.....।।1।।

कल्पवृक्ष मानो लहराया,
कलियुग में सतयुग का साया,
होता है सात्त्विक नाज, हम.....।।2।।

तुलसी की प्रतिकृति ज्यों लगते,
(महाप्रज्ञ – प्रतिकृति ज्यों लगते)
भूमण्डल पर रहो चमकते,
तुम करो युगों तक राज, हम.....।।3।।

तारों में ज्यों चाँद सुहाये,
महाश्रमण जी सबको भाये,
हैं तारण–तरण जहाज, हम.....।।4।।

तिलक दिवस हम 'विजय' मनायें,
शुभ भावों का अर्घ्य चढ़ायें,
अर्पित चरणों में साज, हम.....।।5।।

लय :– ऐसा कोई संत मिले

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नमन महाश्रमण गुरुवर को, सदा जो जगमगाते हैं,
गहन अन्धकार में भटके हुओं को पथ दिखाते हैं।।
।।स्थायी पद।।

सिद्धयोगी मधुरभाषी, त्यागमय जिन्दगी इनकी,
तपस्वी हैं, यशस्वी हैं, धर्म की लौ जलाते हैं।।1।।

मोहनी मुख छवि इनकी, सभी का मन लुभाती है,
अमृत रस वर्षिणी आँखें, शीश जन–जन झुकाते हैं।।2।।

गजब इनकी फकीरी है, मस्त रहते स्वयं में हैं,
बांटते प्रेम की दौलत, सदा ये मुस्कुराते हैं।।3।।

खिला है भाग्य शासन का, मिले ऐसे निपुण नेता,
सुखद अनुशासना इनकी, 'विजय' मंगल मनाते हैं।।4।।

लय :– सजन रे झूठ मत बोलो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

महाश्रमण गुरुवर जी दुनिया से न्यारे हैं,
तपती दुपहरी में शीतल फंवारे हैं,
भक्ति का संग लाये हैं उपहार,
भक्त का वन्दन करो स्वीकार।।स्थायीपद।।

इस देह में मानो साक्षात् ईश्वर है,
व्यवहार से लगते, करुणा के सागर हैं,
कांटों में भी हरदम बन फूल वे खिलते,
कष्टों में निर्भय हो सन्मार्ग पर चलते,
अंधकार को हरते त्रिभुवन उजारे हैं–2,
तपती दुपहरी .....।।1।।

श्रद्धा के सुमनों की थाली सजायें हम,
प्राणों के मन्दिर में गुरु को बिठायें हम,
पद धूल चरणों की सिर पर लगायें हम,
जीवन में हम हरपल मंगल मनायें हम,
निशिदिन चमकते ये नभ के सितारे हैं–2,
तपती दुपहरी .....।।2।।

वचनों में है जादू मन मोह लेते हैं,
दुःख से घिरे नर को वे त्राण देते हैं,
पाकर सुगुरु ऐसे हम भाग्यशाली हैं,
इस संघ में देखो हरदम दीवाली है,
लगते 'विजय' गुरुवर, जन–जन को प्यारे हैं–2,
तपती दुपहरी .....।।3।।

लय :– मुझसे जुदा होकर.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शासन की शान हो, नेता महान् हो,
आँखों की ज्योत हो तुम हम सबके त्राण हो।।
।।स्थायीपद।।

सौभाग्य है हमारा तुम से सुगुरु मिले,
गण में खुशी है छाई, सपने सभी फले,
ले जाने भवधि पार ज्यों उतरा विमान हो।।1।।

कोमल हो फूल की ज्यों व्रत में कठोर हो,
रुकते न डग तुम्हारे, तम क्यों न घोर हो,
समता–सहिष्णुता में पृथ्वी समान हो।।2।।

करुणा भरा हुआ दिल, आँखें हैं मोहती,
वाणी अमृत उंडेलती, मूरत है शोभती,
आशा टिकी तुम्हीं पर हम सबके प्राण हो।।3।।

महाप्रज्ञ और तुलसी ने था तुम्हें रचा,
निर्णय लिया उन्होंने सबको 'विजय' जचा,
सन्मार्ग तुम दिखाते युग के प्रधान हो।।4।।

लय :– चौहदवीं का चाँद हो

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मेरे दिल की हर धड़कन में गूंजे गुरु की आवाज,
वन्दन मेरा लीजिए महाश्रमण गुरुराज,
मेरा उद्धार कर दो, नाव को पार कर दो।।स्थायीपद।।

नेमा माँ की गोद की खूब बढ़ाई शान,
बचपन में उसने दिया संस्कारों का ध्यान,
हर कोई कर रहा है, ऐसी माता पर नाज, वन्दन...।।1।।

विनय–समर्पण आदि गुण होते हैं साकार,
सागर सम व्यक्तित्व है कौन पा सके पार,
पाकर तुम सा गणनेता पुलकित है सकल समाज, वन्दन...।।2।।

तुलसी अरु महाप्रज्ञ की कृपा मिली सुविशेष,
बने बिन्दु से सिन्धु तुम शासन के अखिलेश,
जन–जन के तुम आलम्बन, हो तारणतिरण जहाज, वन्दन...।।3।।

युग–युग दीपो देवता! शासन के सम्राट्,
स्वस्थ रहे तन–मन सदा लगा रहे नित ठाठ,
है 'विजय' भावना सबकी तुम करो अचक्का राज, वन्दन...।।4।।

लय :– मेरे सर पै रखदै गुरुवर अपने ये दोनों हाथ...

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जहाँ हर डाल–डाल पर खिलते तप के फूल,
जहाँ का मौसम रहता है सबके अनुकूल,
तेरापथ पर हमको गौरव है, धरती का यह असली वैभव है,
जीवन दाता, भाग्य विधाता, है यह उपकारी,
संघ की जयहो जय हो जय–4 ।।स्थायीपद।।

अंधेरी ओरी में भीखण ने आलोक बिखेरा,
हाथ जोड़कर बोले नत हो पन्थ प्रभो! यह तेरा,
बीज बना वटवृक्ष आज वह लगता मनहारी, संघ की....।।1।।

नन्दन वन से उपमित शासन सदा सब्ज यह रहता,
धरती पर ज्यों परम सुखों का दरिया हरदम बहता,
आलम्बन है यह जन–जन का जुड़ी है इकतारी, संघ की....।।2।।

कलियुग में भी सतयुग जैसा देखें आज नजारा,
भूली भटकी नौकाओं को मानो मिला किनारा,
आर्य भिक्षु के तप का फल है, जाएं बलिहारी, संघ की.....।।3।।

'विजय' उच्च आदर्शों से गण जग में शोभा पाता,
रहता सदा वसन्त यहाँ पर मन का ताप मिटाता,
गौरव गाते, शीश झुकाते, सारे नर नारी, संघ की.....।।4।।

लय :– यहाँ हर कदम–कदम पे धरती बदले रंग

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उडान –
संघ अपना प्राण है, संघ है अपनी शरण,
संघ अपनी शान है, संघ को करते नमन।।

आयी दीवाली संघ में, छाई खुशहाली संघ में,
इस संघ को – 2 वन्दन करें – 2।।स्थायी पद।।

यह संघ भाग्य से मिला, उद्यान मानो है खिला,
पग–पग बिछे यहाँ फूल हैं, सुरभित यहाँ की धूल है,
गौरवभरा इतिहास है, रहता सदा मधुमास है,
यह बांटता मुस्कान है, भरता सभी में प्राण है,
धरती का यह श्रृंगार है, मंगल मिला उपहार है,
यह संघ प्राणाधार है, यह संघ खेवनहार है।।1।।

त्यागी–तपस्वी हैं यहाँ, लेखक–मनस्वी है यहाँ,
विद्वान्–ज्ञानी भी यहाँ, शास्त्रज्ञ–ध्यानी भी यहाँ,
सेवाव्रती साधक कई, हैं योग आराधक कई,
पुलकित दिशाएं हैं सभी, जीवित कलाएं हैं सभी,
गुण से भरा भण्डार है, अतिशय हुआ विस्तार है,
यह स्वर्ग ज्यों साकार है, इस संघ का उपकार है।।2।।

बेजोड़ मर्यादावली, गण में रहे जिन्दादिली,
गुरु भिक्षु ने की स्थापना, रहते सभी पुलकित मना,
हैं शिष्य सद्गुरु के सभी, उलझन न आती है कभी,
सुविनीत सतियां–संत है, यह शुद्ध तेरापंथ है,
दृढ़ संघ का प्राकार है, पाता नवीन निखार है,
रहता 'विजय' गुलजार है, सब बोलते जयकार हैं।।3।।

लय :– आवाज दो, हम एक हैं.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

साध्वीप्रमुखाएं प्रवर, तेरापंथ की शान,
भूल नहीं सकते कभी, उनका हम अवदान।।
।।जयवन्ता है संघ।।1।।
जय गुरुवर ने था किया, गण में बहुत विकास,
साध्वीप्रमुखा का रचा, एक नया इतिहास।
।।जयवन्ता है संघ।।2।।
सरदारांजी को मिला सबसे पहला स्थान,
जेतरूपजी–चंदना, पिता–मात अभिधान।।
।।जयवन्ता है संघ।।3।।
मघवा भगिनी दूसरी, सती गुलाबां नाम,
सरस्वती का रूप थी, ज्योतिर्मय गुणधाम।।
।।जयवन्ता है संघ।।4।।
वीदासर वर ग्राम था, बन्ना माँ अभिधान,
पूरणमलजी थे पिता,सचमुच थे पुनवान।।
।।जयवन्ता है संघ।।5।।
साध्वीप्रमुखा तीसरी, नवलांजी विख्यात,
माता थी श्री चन्दना, कुशालचन्द जी तात।।
।।जयवन्ता है संघ।।6।।
चौथी जेठांजी सती, कानकंवर जी मात,
सेवाराम पिता हुए, जीवन था अवदात।।
।।जयवन्ता है संघ।।7।।
कानकंवरजी पांचवीं, साध्वीप्रमुखा नाम,
माँ चंदना–लच्छी पिता, सालासर था ग्राम।।
।।जयवन्ता है संघ।।8।।
छट्ठी झमकूजी प्रवर, साध्वीप्रमुखा नाम,
रामलालजी तात थे, चांदा माँ अभिराम।।
।।जयवन्ता है संघ।।9।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तुलसी भगिनि सातवीं, लाडांजी अभिधान,
सहिष्णुता की मूर्तिवत्, थी विशिष्ट पहचान।।
।।जयवन्ता है संघ।।10।।
साध्वीप्रमुखा आठवीं, कनकप्रभा गुणखान,
सूरज–छोटा तात–माँ, पाया अति सम्मान।।
।।जयवन्ता है संघ।।11।।
ज्ञानी–ध्यानी महागुणी, तपसी सतियां–संत,
हुए और होंगे सदा, हर दिन बने बसंत।।
।।जयवन्ता है संघ।।12।।
सेवाभावी हैं हुए, संत–सती बेजोड़,
संघ न ऐसा जगत् में, जो कर पाए होड़।।
।।जयवन्ता है संघ।।13।।
मर्यादा को मानते, संत–सती सब प्राण,
करूं सदा अभिवंदना, जय–जय संघ महान्।।
।।जयवन्ता है संघ।।14।।
'विजय' भक्ति से गा रहा, गण का गौरव गान,
रहे सदा सरसब्ज यह, शासन का उद्यान।।
।।जयवन्ता है संघ।।15।।

लय :– सामान्य छन्द

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तेरापंथ शासन प्यारा है,यह धरती का उजियारा है,
अमर रहे यह संघ हमारा, गूंज रहा यह नारा हैं।।
।।स्थायीपद।।

वीर भिक्षु ने निज हाथों से इसकी नींव लगाई थी,
आए थे संघर्ष अनेकों पर नहीं पीठ दिखाई थी,
कदम नहीं रुकते हैं जिसके वह मानव कब हारा है।।1।।

जिन वचनों की सार्वभौम व्याख्या कर सबको अपनाया,
अन्धकार में दीप जलाकर सबको सत्पथ दिखलाया,
गूंज रहा है चिहुं दिशि में तेरापंथ का इकतारा है।।2।।

शुद्धाचार विचार प्रणाली गुरुवर का अवदान है,
मर्यादा पर चलने से मिट जाता हर व्यवधान है,
उत्तम आचार्यों ने इस शासन को सदा निखारा है।।3।।

है अनन्त उपकार भिक्षु का श्रद्धा से हम नमन करें,
महाश्रमणजी के पदचिन्हों पर चलकर हम 'विजय' वरें,
शासन के हम भक्त, हमारा शासन ही रखवारा है।।4।।

लय :– हम चलते तेरे इशारे पर.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गौरवशाली संघ हमारा इसकी महिमा गाओ,
मर्यादा का पर्व मनाओ, यश झंडा फहराओ।।स्थायीपद।।

आर्य भिक्षु ने मर्यादा का पहला पत्र बनाया,
जयाचार्य ने उसको ही उत्सव का रूप दिलाया,
संत–सती आदर देते हैं प्राणों से इसको ज्यादा,
उनकी ही कुर्बानी ने इस गणवन को विकसाया,
उन बलिदानी वीरों की गाथा को सुनो, सुनाओ।।1।।

माघोत्सव में शामिल होने संत–सती ये आते,
गुरुदर्शन कर हल्के होते पथ का क्लेश मिटाते,
एक दूसरे को ये अपने अनुभव हैं बतलाते,
शिक्षामृत पाकर सद्गुरु का पुलकित सब हो जाते,
मर्यादा का मिला राजपथ आगे कदम बढ़ाओ।।2।।

अमल धवल इन फूलों से गण की बगिया महकाती,
समवशरण की छटा देख कर इन्द्र सभा शरमाती,
महाश्रमणजी तारों के बीच चन्दा की ज्यों शोभे,
रोशन दिग्–दिगन्त को करते अमिट जले यह बाती,
''विजय'' सुगुरु के सपनों को सब मिल साकार बनाओ।।3।।

लय :– पन्द्रह अगस्त है आज सभी आजादी दिवस मनाओ.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जय बोलो, जय बोलो, धर्म–संघ की जय बोलो,
गुण गाओ, आओ, आओ, अन्तर् कलीमस को धोलो।।स्थायीपद।।

गुण रत्नों का सागर है, हम सबका अपना घर है,
मिला नहीं मुझको इससे, संघ दूसरा बढ़कर है।।1।।

सबका सबल सहारा है, नयनों का यह तारा है,
श्री भिक्षु का संघ मुझे, प्राणों से भी प्यारा है।।2।।

न्याय–नीति पर सदा चले, गण उपवन यह सदा फले,
स्नेह सुगुरु का पाकर के, अगणित अब तक दीप जले।।3।।

स्वार्थ भावना को छोड़ो, संघ व्यवस्था मत तोड़ो,
शासन शान बढ़ाने को, कन्धे से कन्धा जोड़ो।।4।।

भाग्ययोग शासन पाया, महाश्रमण का शुभ साया,
'विजय' संघपति चरणों में, निशि–दिन रहता हरषाया।।5।।

लय :– सायोनारा सायोनारा वादा निभाऊंगी.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उड़ान–

वीर प्रभु के प्यारों, चिर निद्रा को तुम त्यागो,
शुभ अवसर है आया, अंगड़ाई लो अब जागो,
प्रभुवर की अमृत वाणी, घर–घर में है पहुँचानी,
तस्वीर धर्म की सच्ची, संसार को है दिखलानी।।
महावीर की ओ संतानों, सुन लो प्रभुवर की वाणी,
जिसको अपना जीवन में, तर रहे हैं लाखों प्राणी।।स्थायीपद।।

है सत्य–अहिंसा का स्वर, गूंजा था भारत भर में,
समता की धार बहायी, प्रभु ने मानव के उर में,
इन वचनों पर चलने से, सुखमय बनती जिन्दगानी,
जिसको..... ।।1।।
चाहे हिन्दू हो या मुस्लिम, चाहे फिर सिक्ख–ईसाई,
मानवता के नाते तुम, समझो हैं अपने भाई,
है प्रेम और करुणा ही,मानव की सही निशानी,
जिसको..... ।।2।।
संकीर्ण भावना तजकर, मानो अपना जग सारा,
मेरे–तेरेपन की अब, टूटे यह बन्धन कारा,
जनहित में करना सीखो तुम स्वार्थों की कुर्बानी,
जिसको..... ।।3।।
ये प्राण भले ही जाएं, पर प्रण को कभी न छोड़े,
सच्चाई के सत्पथ से, जो मन को कभी न मोड़े,
युग–युग तक उन वीरों की रहती है अमर कहानी,
जिसको..... ।।4।।

जय हो, महावीर की जय हो,
जय हो, महावीर की जय हो,
जय हो, जय हो, जय हो, जय हो।।

लय :– ओ मेरे वतन के लोगों!

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उड़ान–

जगाने विश्व को इस धरा पर महावीर आये थे,
पाप–संताप को हरने शान्ति संदेश लाये थे।।

तसरीफ सच्ची लाये हैं संग में,
श्रद्धा के फूलों की ओ वीर प्यारे,
धर्म धुरन्धर, ओ गुण सागर,
तीन भुवन के तुम उजियारे,
भव दलदल में फंसी है कब से,
किश्ती लगादो हमारी किनारे।।
धर्म धुरन्धर .....।।स्थायीपद।।

तुम्हीं हो अन्तर्यामी, तुम्हीं हो जग में नामी–2
तुम्हीं सबके सहारे, तुम्हीं हो खेवनहारे,
शरण में जो भी आया, पार उसको लगाया,
दशा उसकी सुधारी, तभी सुमिरन सुखकारी,
विघ्न बाधाएं मिटती, कर्म की बेड़ी कटती,
तेरी अनगिन घटनाएं, क्या–क्या बतलाएं,
शब्दों के घोड़े, कैसे ये दौड़े,
दिल दर्पण में तुझको निहारें, धर्म धुरन्धर...।।1।।

चन्दना को था तारा, दुःख से उसे उबारा–2
हुई थी कठिन परीक्षा, उसे प्रभु ने दी दीक्षा,
परम पावन बनाया, मिटी कर्मों की माया,
संघ नेतृत्व संभाला, खुला शिवपुर का ताला,
बनी थी जागृत नारी, रहेगी नित आभारी,
समता का पाठ पढ़ाया, भेद मिटाया,
मंगलमय वाणी, जनहित कल्याणी,
चरणों में नत हो जाते हैं सारे, धर्म धुरन्धर...।।2।।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दरश तेरा सुखकारी, महक उठती फुलवारी–2
चित्त पुलकित हो जाता, मनुज है मंगल पाता,
राह खुद ही मिल जाती, भावनाएँ फल जाती,
कष्ट लेते विदाई, मिले पग–पग बधाई,
सफलता है चल आती, विफलता है टल जाती,
जिनवर! तुम्हारा साया, है ठण्डी छाया,
सौभागी पाता, चरणों में आता,
'विजय' नमन कर जीवन सुधारें, धर्म धुरन्धर... ।।3।।

लय :– सिरड़ी वाले साईं बाबा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सहारे तुम्हारे त्रिशलादुलारे, लाखों ने नैया पार उतारी,
त्रिभुवन तारे, तुमको पुकारे,रोज सबेरे सब नर नारी।।स्थायीपद।।

अमृत बरसता, आँखों से हरदम, तुम करुणा के थे महासागर,
संगम ने भी पराजय मानी, रोहिणेय का शान्त हुआ ज्वर–2,
मन को हरती, पुलकन भरती, मुद्रा तुम्हारी मंगलकारी।।1।।

दासप्रथा का मूल मिटाया, चन्दनबाला को था तारा,
अर्जुन जैसे महापापियों के, दिल को बदला दिखाया किनारा–2,
कलुष निकन्दन, भवदुःखभंजन, तुम हो धरती के उपकारी।।2।।

चण्डकोशिये ने रोषारुण हो, प्रभु चरणों में डंक लगाया,
देवराज ने निज शीश झुकाया, फिर भी तनिक नहीं अन्तर् आया–2
समता पथ पर, बढ़े तुम निरन्तर, तीन भुवन से महिमा न्यारी।।3।।

आँखों में मेरे बस जाओ तुम, जीवन उपवन को सरसाओ,
'विजय' न कोई चाह रही है, प्रज्ञा का दीपक नाथ! जलाओ,
पलक बिछाऊं, गुण गान गाऊं, चरणों की जाऊं मैं बलिहारी।।4।।

लय :– अरे द्वारपालों, कन्हैया से कहदो

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उड़ान–
यों तो दुनिया में कई, पुरुष हुए हैं अवतारी,
मन में बसी एक मूरत है, महावीर प्रभु की मनहारी।।

सारे जहाँ मेंऽऽ गूंज रहा प्रभु नाम,
वीर! तेरी शरण महासुखधाम, धामऽऽ,
वीर! तेरी शरण.... ।।स्थायीपद।।

मंगलमय नाम प्रभु का जिसने भी लिया,
कांटों भरी डगर को, पार उसने कर दिया,
अपनी सुदूर मंजिल को उसने निकट किया,
बढ़ता सदा है रहता, लेता नहीं विराम।।1।।

भक्ति का दीप जिसके भीतर है जला,
दूर होता स्वतः ही कष्टों का सिलसिला,
बाग खुशियों का उसके जीवन में खिला,
सुधरते हैं उस मनुज के सोचे सब काम।।2।।

पापी भी शरण में आ भव सागर तर गये,
बिगड़ी दशा थी जिनकी वे भी सुधर गये,
मृत्यु को पार करके लाखों अमर हुए,
मुक्तिदाता को 'विजय' नित करते हैं प्रणाम।।3।।

लय :– सोले वर्ष की बाल्ही उमर को सलाम.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वो सबको प्यारा है, त्रिभुवन तारा है,
खेवनहारा है, दीपां नन्दन–2,
जग उजियारा है, गण रखवारा है,
खेवनहारा है, दीपां नन्दन–2 ।।स्थायीपद ।।

माँ ने सिंह का सपना देखा,
भाग्यवान सुत होगा, परखा प्रबल पुण्य का लेखा,
वो मन में हरसायी, अंखियां विकसायी,
खेवनहारा है, दीपां नन्दन–2 ।।1 ।।

धर्म क्रांति का बिगुल बजाया,
कदम बढ़ाये सत्य मार्ग पर रुकना कभी न भाया,
मेटा अंधियारा, कभी न मन हारा,
खेवनहारा है, दीपांनन्दन–2 ।।2 ।।

तेरापंथ की नींव लगाई,
भूली भटकी मनुज जाति को सच्ची राह दिखाई,
वो सच्चा उपकारी, जाएं बलिहारी,
खेवनहारा है, दीपांनन्दन–2 ।।3 ।।

'विजय' भिक्षु का गौरव गायें,
परम पुरुष की पावन मुख मुद्रा को नित उठ ध्यायें,
(अन्तिम अनशन स्थल सिरियारी पर हम अलख जगायें,)
श्रद्धा विकसायें, सत्पथ अपनायें,
खेवनहारा है, दीपांनन्दन–2 ।।4 ।।

लय :– तूं कितनी अच्छी है, तूं कितनी प्यारी है.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जन मन मंगलकारी, नेमिनाथ नमो,
अघदल भंजनहारी, नेमिनाथ नमो।।स्थायीपद।।

संघ चतुष्टय के संस्थापक, सत्य–अहिंसा के संगायक,
थे जग के उपकारी।।1।।

स्नेह पाश को क्षण में तोड़ा, राजीमति से मुखड़ा मोड़ा,
महिमा जग में न्यारी।।2।।

पशुओं का सुनकर आक्रन्दन, मोड़ लिया था अपना स्यन्दन,
दीनों के दुखहारी।।3।।

राग–रोष की मिटी कहानी, कर दर्शन हरषे सब प्राणी,
जाते सब बलिहारी।।4।।

'संत विजय' प्रभु के गुण गाता, रसना एक पार नहीं पाता,
बोलो सब नर–नारी।।5।।

लय :– तुमको लाखों प्रणाम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तेरे द्वार पर खड़ा हूँ, करुणा नजर निहारो,
भगवान्! भक्त तेरा, भव पार तुम उतारो।।स्थायीपद।।

आँखों में रूप तेरा, प्रत्यक्ष क्यों न होता,
दर्शन बिना तुम्हारे, मैं भार कब से ढोता,
बिगड़ी हुई दशा को, अयि नाथ! तुम सुधारो।।1।।

अज्ञान के तिमिर में, देता न पथ दिखाई,
मंजिल कहाँ है मेरी, कुछ तो बतादो सांई,
भव जाल में फंसा हूँ, प्रभुवर! मुझे उबारो।।3।।

बीता समय बहुत है सुनलो पुकार मेरी,
मन का जलादो दीपक प्रभुवर! करो न देरी,
सरसब्ज बाग करदो, दुविधा सकल निवारो।।3।।

शरणागतों की रक्षा करते रहे सदा तुम,
कब से मैं ढूंढ़ता हूँ, प्रभु हो गये कहाँ गुम,
तुम हो 'विजय' दयालु, मेरे काज अब संवारो।।4।।

लय :– मेरा आपकी दया से सब काम हो रहा है

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

द्वारे तुम्हारे प्रभु! कब से मैं खड़ा,
श्रद्धा का धागा प्रभु! तुमसे है जुड़ा,
तुझे शीश झुकाऊँ मैं, तेरी मूरत ध्याऊँ मैं।।स्थायीपद।।

भाती है मन को मुख मुद्रा तुम्हारी,
जाऊं पूज्य चरणों की नित बलिहारी,
आँखों में बसाऊं मैं, नित उठ गुण गाऊं मैं, द्वारे.....।।1।।

लाखों ही पतितों को तुमने उबारा,
शरणागतों का था जन्म सुधारा,
तेरी करुणा पाऊं मैं, निज भाग्य जगाऊं मैं, द्वारे.....।।2।।

स्वार्थों से दूषित हैं दुनियां के नाते,
कोई भी नहीं यहां साथ निभाते,
तुझको ही मनाऊं मैं, नहीं इत उत जाऊं मैं, द्वारे.....।।3।।

साक्षात् दर्शन दे दो ओ मेरे स्वामी,
'विजय' तुम्हीं हो सच्चे अन्तर्यामी,
प्रभो! अर्ज सुनाऊं मैं, जीवन सरसाऊं मैं, द्वारे.....।।4।।

लय :– हारे का तूं है सहारा सांवरे.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तेरा कौन–सा है मन्दिर, जरा सामने आकर बतलादे,
मन पूछ रहा फिर–फिर, जरा सामने आकर बतलादे।।
।।स्थायीपद।।

मैंने ढूंढ़ लिया जग सारा, नहीं पाया द्वार तुम्हारा,
आयी गम की घटाएं घिर।।1।।

तूं ही जीवन उजियारा, मेरा बस एक सहारा,
मेरी रीती झोली भर।।2।।

मैं मंगल सदा मनाऊं, तेरे दरश 'विजय' जो पाऊं,
चरणों में झुके मेरा सिर।।3।।

लय :– कहीं दीप जले कहीं दिल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुझे देव! तुम बतादो, कैसे तुझे रिझाऊँ,
तुम वीतराग ठहरे, कैसे तुझे मनाऊँ।।स्थायीपद।।

दोषों से मैं भरा हूँ, मूरत निहारूं कैसे,
किस विध करूँ मैं पूजा, दुविधा निवारूँ कैसे,
मझधार में फंसा हूँ, मैं तीर कैसे पाऊँ।।1।।

तूं ने जो पथ दिखाया, मैंने उसे भुलाया
आकर्षणों में पड़कर, अवसर बहुत गंवाया,
करुणा करो सुपथ पर, अब से कदम बढ़ाऊँ।।2।।

प्राणों का पंछी मेरा, तेरी रटन लगाये,
दर्शन तुम्हारा पाने, मन कब से छटपटाये,
स्वर्णिम प्रभात आये, यह गीत गुनगुनाऊँ।।3।।

घनघोर तम है फैला, आशा किरण तुम्हीं हो,
सब प्राणियों को देते, प्रभुवर! शरण तुम्हीं हो,
करुणा करो 'विजय' तुम मैं भाग्य को जगाऊँ।।4।।

लय– तुझे भूलना तो चाहा.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तुम्हें वन्दन करता हूँ, भक्ति रस से भरा,
तुम्हें अर्पण करता हूँ, दृष्टि डालो जरा।।
तुम हो जीवन की पुलकन, मेरे दिल की हो धड़कन,
नाथ! तुम हो सहारे, सच्चे खेवनहारे,
मन में बसे हो तुम, फूलों में ज्यों खुशबू,
सब कुछ सौंपा तुझे, बाकी क्या तुमको दूं।।स्थायीपद।।

जग है यह माया, बादल छाया,
मैंने प्रभु जी यह जान लिया,
कौन है अपना, कौन पराया,
मैंने यह पहचान लिया,
मुझे कर दो सुपावन प्रभो!
तुम ही हो सावन, नाथ! तुम.....।।1।।

मन में बसाऊं, ध्यान लगाऊं,
मेरे दिल में तुम्हारी तस्वीर है,
तुमको मनाऊं, गौरव गाऊं,
मेरे आराध्य प्रभु महावीर है,
हो जाये तेरा दर्शन,
खिल जाये भाग्य उपवन, नाथ! तुम.....।।2।।

लाखों को तारा, पार उतारा,
मुझको भी तुम्हारी कुछ करुणा मिले,
भय मिट जाये,दिल हरसाये,
तम में 'विजय' ज्यों दीपक जले,
देरी करते क्यों भगवन्!
तोड़ो मेरे भव बन्धन, नाथ! तुम.....।।3।।

लय :– तूं ही तो जन्नत मेरी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मन में बसा है, एक नाम तेरा,
प्रभो! तुझे करूं मैं नमन,
ओऽऽ तूं ही सहारा मेरा, तूं ही उजारा मेरा, मन में....
।।स्थायीपद।।

इस जिन्दगी में प्रभु का सबल सहारा,
लेता जो शरण है,मिलता उसे किनारा,
ध्याता है भक्ति से जो,वो निहाल हो गया,
सुख शान्ति का हमेशा, जीवन यहां जिया,
प्रभु के द्वारे, पातक सारे, इक दिन होते शमन।।1।।

जब चन्दना ने महावीर को पुकारा,
ले बाकलों की भिक्षा, संकट सकल निवारा,
होता नहीं यकीन चमत्कार कर दिया,
दासी बनी थी उसका उद्धार कर दिया
दुख से उबारा, टूटी कारा, महका जीवन चमन।।2।।

कब भावना प्रभो! तुम स्वीकार करोगे,
दर्शन दिला के भक्तों की पीड़ा हरोगे,
होगा 'विजय' सफल कब सपना जो पला,
जीवन का कीमती,यह समय भी है ढला,
करुणा कर दो, पीड़ा हर दो, मिट जाये आवरण।।3।।

लय :– दिल दे दिया है.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तेरी आरती उतारें,
प्रभु! करुणा नजर निहारें।।
।।स्थायीपद।।

मन मंदिर में तुम आओ,
इन आँखों में बस जाओ,
तुम नैया खेवनहारे।।1।।

प्रभु! तुम हो अन्तर्यामी,
तन–मन के तुम हो स्वामी,
तम में तुम हो उजियारे।।2।।

भूलें नहीं नाम तुम्हारा,
ध्याते हम ध्यान तुम्हारा,
भवदधि से नाथ! उबारें।।3।।

तुम हो त्रिभुवन के तारे,
आये हम तेरे द्वारे,
गूंजे जय–जय के नारे।।4।।

भावों का थाल सजाया,
श्रद्धा का द्वार बनाया,
हो 'विजय' तुम्हीं रखवारे।।5।।

लय :– कल्पित

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ध्यान धरूं, गुण गान करूं मैं,
नाथ! तेरे चरणों में है मन,
करता नमन, पुलकित है नयन,
साक्षात् दिला दो मुझे दर्शन।।स्थायीपद।।

मैंने सुना प्रभु नाम में शक्ति छिपी अनपार है,
जो भी सुमरता भाव से होता बेड़ा पार है,
आत्म शक्तियाँ जग जाती है, हो जाता उद्धार है।।1।।

मन में बसो मेरे सदा, धन्य बने यह जिन्दगी,
औरों से क्या काम है, करूं तुम्हारी बन्दगी,
मींरा की घनश्याम से ज्यों, लौ प्रभुवर! तुमसे लगी।।2।।

दरश मिले साक्षात् जो, इन आँखों में उतार लूं,
जड़ता अपनी दूर कर, अपना भाग्य संवारलूं,
ज्ञान बुहारी को लेकर मैं, कांटे सकल बुहारलूं।।3।।

प्रभुवर के दरबार में, स्वर्णिम सदा प्रभात है,
सबका वह आधार है, डरने की क्या बात है,
'विजय' देव की दयादृष्टि में, अमृत की बरसात है।।4।।

लय :– प्यार हुआ इकरार हुआ

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मेरे मन मन्दिर में आओ, मेरी नैया पार लगाओ,
सूना–सूना है जहाँ, मेरे प्रभु हो कहाँ, मेरे मन..... ।।
।।स्थायीपद।।

देवते! तेरे द्वार पर कभी से खड़ा–2
नाथ! तेरे चरण में कब से मैं पड़ा–2,
करूं भक्ति मैं सदा, तुम न मेरे से जुदा,
अब करुणा रस बरसाओ, सूना..... ।।1।।

नाम जब से सुना मैं तेरा हो गया–2,
मनोहारी मूरत में मन खो गया–2,
पूजा तेरी मैं करूं, ध्यान तेरा ही धरूं,
मेरा प्रज्ञा दीप जलादो, सूना..... ।।2।।

जिन्दगी के ये पल बीतते जा रहे–2,
नीर सरिता का कलकल ज्यों बहे–2,
रीती झोली 'विजय' भरो, प्रभुजी देरी मत करो,
प्यासी धरती को सरसाओ, सूना..... ।।3।।

लय :– मेरा दिल ये पुकारे आजा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सांवरियाऽऽऽऽ तेरे चरणों में प्रणाम है, मेरा प्रणाम है,
होठों पै रहता बस तेरा ही नाम है, सांवरियाऽऽऽऽ।।स्थायीपद।।

अंधियारी रातों में तूं है प्रकाश,
दुःखियारी घड़ियों में तूं है उल्लास,
तूं ही शिव शंकर है,
तूं ही मेरा राम है–2।।1।।

दुनिया में सच्चा प्रभु का है नाम,
जीवन की नैया को लेते हैं थाम,
औरों से क्या लेना,
प्रभु से ही काम है–2।।2।।

'विजय' बसो जैसे फूलों में गन्ध,
वरदान दो नाथ! भटकन हो बन्द,
मेरे लिए देव!
तूं ही शिव धाम है–2।।3।।

लय :– ढोलीड़ा, ढोल धीमो धीमो बगाड़ मा (गरवा राग)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भगवन्! मन मंदिर में आओ,
चिन्मयता का दीप जलाओ।।स्थायीपद।।

भटक रहा हूँ कब से जग में, कर्म जंजीर बंधी है पग में,
डोल रही है नाव भंवर में, अब तो इसको पार लगाओ।।1।।

मंगलकारी तेरा दर्शन, पाता कोई सौभागी जन,
अनुपम छवि दिखलाकर स्वामी, नैनों की चिर प्यास बुझाओ।।2।।

राग–द्वेष के बन्धन तोडूं, तुमसे सच्ची लयता जोडूं,
पर भावों की ममता छोडूं, ऐसा नूतन बोध जगाओ।।3।।

सत्य मार्ग पर बढ़ता जाऊं, विपदा में भी नहीं घबराऊं,
आत्मशक्ति जग जाए ऐसी, मुझको वह वरदान दिलाओ।।4।।

मैं आया हूं शरण तुम्हारी, महकादो जीवन–फुलवारी,
नाथ! तुम्हारा मुझे भरोसा, 'विजय' भावना सफल बनाओ।।5।।

लय :– जीवन पल–पल बीता जाए

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दरश बिन व्याकुल हैं ये प्राण,
नाथ! तुम्हीं हो शरणागत जीवों के रक्षक त्राण।।स्थायीपद।।

जन्म–जन्म का मैं हूँ प्यासा,
तुम पर टिकी हुई है आशा,
दूर हटे अज्ञान कुहासा, ऊगे स्वर्ण विहान।।1।।

झूठी है यह दुनिया सारी,
सच्ची है इक प्रीत तुम्हारी,
रसना पर रहता है निशि दिन तेरा ही बस गान।।2।।

संकट की जब घड़ियां आती,
मानव को बेचैन बनाती,
तब–तब तुम ही दिखलाते हो, जग को पथ आसान।।3।।

तुम हो त्रिभुवन के उजियारे,
नैया के तुम खेवनहारे,
टिकी हुई है आशा तुम पर नाथ! करो कल्याण।।4।।

एक बार तुम दरश दिलादो
चिन्मयता का दीप जलादो,
'विजय' भक्त के इन भावों पर, देना कुछ तो ध्यान।।5।।

लय :– पपैया काहे मचावत शोर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लो दयानिधे! चरण शरण में, द्वार तुम्हारे भक्त खड़ा है।
देव! तुम्हारे दर्शन करने मन सागर यह उमड़ पड़ा है।।
।।स्थायीपद।।

तूने दिया जगत् को अनुपम अनुभव सिद्ध समन्वय का पथ,
सत्य–अहिंसा के पहियों पर बढ़े सदा यह जीवन का रथ,
तेरे अनुपम आदर्शों से मानवता का चमन हरा है।।1।।

तूने सिखलाया जन–जन को अप्रमत्त रहना क्षण–क्षण में,
निर्भय होकर बढ़ते जाना, अविरल गति से जीवन रण में,
तेरे उपदेशों से लाखों लोगों का जीवन सुधरा है।।2।।

पत्थर दिल भी पिघल गए थे तेरे क्षमा–भाव को लखकर,
तस्कर भी भगवान् बन गए, पद–पंकज में मस्तक रखकर,
तुम सम पुरुष रत्न को पाकर 'विजय' हो गई धन्य धरा है।।3।।

लय :– लो श्रद्धांजलि राष्ट्र – पुरुष तुम (भैरवी)

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रभु का नाम, प्रभु का नाम, भज ले मन तूं प्रभु का नाम,
बन निष्काम, आठों याम, भज ले मन तूं प्रभु का नाम।।
।।स्थायीपद।।

भटके तेरी जीवन नैया, डोल रही है बिन खेवैया,
प्रभु के हाथों में दे थाम, भजले.....।।1।।

काम–क्रोध ने तुझको घेरा, छाया घट मे घोर अंधेरा,
भूला प्रभुवर का पैगाम, भजले.....।।2।।

विघ्न शमन है प्रभु का सुमिरन, खिल जाता भीतर का उपवन,
होते सिद्ध सभी हैं काम, भजले.....।।3।।

भौतिक सुख की तज अभिलाषा, प्रभुपद पाने की रख आशा,
मिल जायेगा मंगल धाम, भजले.....।।4।।

गहरी हो श्रद्धा कण–कण में, 'विजय' वरो तुम जीवन रण में,
कट जायेंगे पाप तमाम, भजले.....।।5।।

लय :– ओ महावीर! ओ महावीर!

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ओ जरा कर ले प्रभु से तूं प्यार,
जिया का दुःख मिट जाएगा।
ओ चिन्मय मुद्रा को दिल में उतार।।स्थायीपद।।

झूठी है माया सारी, झूठी है काया,
सुख का है साया मानो बादल की छाया,
ओ सारा झूठा है–2 यह संसार, जिया का.....।।1।।

फीका है सारा यह जग का नजारा,
फिर भी क्यों फिरता है मन मारा–मारा,
ओ जरा भीतर भी–2 ले तूं निहार, जिया का.....।।2।।

नफरत के भावों को तूं दफनादे,
मन की मलिनता को जड़ से मिटादे,
ओ पथ के कांटो–2 को ले तूं बुहार, जिया का.....।।3।।

श्रद्धा का दीपक 'विजय' तूं जलाले,
प्यारे प्रभु से तूं प्रीत लगाले,
ओ तेरे जीवन का–2 होगा सुधार, जिया का.....।।4।।

लय :– ओ मैं तो भूल चली बाबुल का देश.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सन्तजनों के पद पंकज में नित उठ शीश झुकाऊँ मैं,
श्रद्धा के फूलों से गूंथी वरमाला पहनाऊँ मैं।।स्थायीपद।।

जिनके अमृत उपदेशों से जन जीवन उपवन सरसाता,
हर भूला–भटका राही भी अपनी मंजिल का पथ पाता–2,
आँखों से बहती है करुणा अपने को नहलाऊँ मैं।।1।।

जिनकी गरिमा से गूंज रहा धरती–अम्बर यह सारा है,
सारे जग में युग–युग बहती जिनके पुण्यों की धारा है–2,
उनकी अनुपम गाथा को शब्दों में क्या बतलाऊँ मैं।।2।।

जो अपने और पराये के भेदों से उपरत रहते हैं,
जो निन्दा और प्रशंसा दोनों को समता से सहते हैं–2,
क्षीर–सिन्धु सम जिनका जीवन दिल की प्यास बुझाऊँ मैं।।3।।

परहित में जो रत रहते हैं, निःस्वार्थ सेवा करते हैं,
अपनी मंगलमय वाणी से जो सबकी पीड़ा हरते हैं–2,
'विजय' संत ऐसी आत्माओं की बलिहारी जाऊँ मैं।।4।।

लय :– चाँद–सी महबूबा हो मेरी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संत चरण गंगा की धारा,
शीश झुकाता है जग सारा।।स्थायीपद।।

इस गंगा में पातक धोलो,
सद्गुण के मोती तुम पोलो,
शीघ्र मिलेगा भवधि किनारा।।1।।

खुला सदा रहता उनका दर,
कोई भी न पराया है नर,
तोड़े दुख दुविधा की कारा।।2।।

देते हैं हितकारी शिक्षा,
लेते हैं दुर्गुण की भिक्षा,
इनका दर्शन है मनहारा।।3।।

धन–कंचन, परिजन को छोड़ा,
प्रभु से अपना नाता जोड़ा,
संयम का पथ है स्वीकारा।।4।।

मंगलमय जीवन बन जाये,
पथ की बाधा टिक नहीं पाये,
'विजय' ज्ञान का हो उजियारा।।5।।

लय :– जीवन हम आदर्श बनायें.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तूफानां में भी नहीं झुक्यो, बीं महापुरुष नै नमन करां,
बाबै भिखण नै नमन करां, दीपानन्दन नै नमन करां,
उणरै पथ रो अनुगमन करां, दीपानन्दन नै नमन करां।।
।।स्थायीपद।।

बगड़ी री छतर्यां में बाबो पहली रात गुजारी ही,
प्राण जाय पर प्रण नहीं जावै, मन में पक्की धारी ही,
द्वेषीजन आखिरकार झुक्या–2, बाबै नै श्रद्धा स्यूं सुमरां,
बाबै भिखण.... ।।1।।

अंधेरी ओरी में यक्ष देव, भीखण रो भक्त बण्यो,
इक चमत्कार जद हुयो केलवो, सारो ही अनुरक्त बण्यो,
सिंह रो सपनो साकार हुयो–2 कष्टां में आपां भी न डरां,
बाबै भिखण.... ।।2।।

बो प्रलोभनां में डिग्यो नहीं, निज आत्मा रो उद्धार कर्यो,
सुख सुविधावां नै ठुकराई, कण्टीलो पथ स्वीकार कर्यो,
अवसर आवै यदि जीवन में–2 सौ टंच स्वर्ण री ज्यूं निखरां,
बाबै भिखण.... ।।3।।

ध्यानावस्था में सिरियारी में, बाबो सुरग सिधायो हो,
पंचम आरै में चोथै आरै रो, सो दृश्य दिखायो हो,
ओम् जय भिक्षु नित जाप करां–2 पग–पग पर आपां 'विजय' वरां,
बाबै भिखण.... ।।4।।

लय :– वो महाराणा परताप कठै.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आरती उतारूं बाबै भिखणजी री भाव स्यूं,
श्रद्धा रै फूलां स्यूं भर्‌यो थाल,
म्हारै मन में बसै प्रभु री मूरत प्यारी।।स्थायीपद।।

कण्टालिया में जाया माता दीपां रै आंगणियै,
वल्लू जी रै कुल नै दियो उजाल, म्हारै.....।।1।।

शास्त्रां रो करके मन्थन सार निकाल्यो,
तेरापंथ री जग में जली मशाल, म्हारै.....।।2।।

मोह गुरु रो त्याग्यो पौरुष जाग्यो,
बांध न पायो आकर्षण रो जाल, म्हारै.....।।3।।

भगीरथ बण थे ल्याया धर्म री गंगा,
पाकर प्रभु नै धरती हुई निहाल, म्हारै.....।।4।।

वीनतड़ी छोटी–सी आ नाथ! सुणाओ,
म्हा भगतां री करज्यो 'विजय' संभाल, म्हारै.....।।5।।

लय :– आज तो हरियालो बनो,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बाबै भिखण जी रो नाम जपूँ भोर–भोर में,
श्रद्धा भावना भरी है, म्हारै पोर–पोर में,
बा ही सांवरी मूरत देखूं हर ठोर में,
श्रद्धा भावना भरी है, म्हारै पोर–पोर में।।स्थायीपद।।

एक गुरु री आज्ञा में गण चालै,
गुरु निर्देश बिन्या पत्तो न हालै,
चेला–चेल्यां नै बांध्या हा बाबो एक डोर में, श्रद्धा.....।।1।।

दीपां रो नन्दन आपां रो उपकारी,
डूबती ही नाव धर्म री उणनै तारी,
फैल्यो उजियारो ज्यूं जग में रात घनघोर में, श्रद्धा.....।।2।।

शुभ मुहूरत में बाबो नींव लगायी,
केलवा री अंधेरी ओरी जगमगायी,
तेरापंथ रो गूंजै हैं डंको चिहुं ओर में, श्रद्धा.....।।3।।

बाबै रो म्हानै आशीर्वाद मिल्यो है,
गणनन्दन वन हरदम रेह्वै खिल्यो है,
'विजय' टिकै नहीं दूजो इण शासन री होड़ में, श्रद्धा.....।।4।।

लय :– मेहन्दी राचन लागी हाथां में बनड़ै रै नाम री,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सांवरिया! थांरै नाम रो, है म्हानै आधार,
नांव पड़ी मझधार में, थे ही खेवनहार।।स्थायीपद।।

प्रगट्या थे संसार में सिंह सपन रै साथ,
गहन अमां ने चीरकर ऊग्यो दिव्य प्रभात,
दीप्या थे कलिकाल में जिनवर ज्यूं साक्षात्।।1।।

शमशाना में थे कर्‌यो प्रभुवर! पहलो वास,
धन्य हुयो पुर केलवो पा पहलो चौमास,
जनता री जड़ता मिटी, फैल्यो ज्ञान प्रकाश।।2।।

साहस रा थे हा धनी, कदै न मानी हार,
मुठ्ठी में रख मौत नै सत्य कर्‌यो स्वीकार,
समता स्यूं हरदम सही गाल्यां री बौछार।।3।।

परचो पायो स्वाम रो अब तक अगणित लोग,
मिलै सफलता पंथ में टल ज्यावे अपजोग,
सुधरै है बिगड़ी दशा, होवै देह नीरोग।।4।।

आवै श्रद्धा भाव स्यूं, जन सिरियारी धाम,
विघ्न मिटै अरिगण हटे, मंत्र बण्यो प्रभुनाम,
'विजय' भिक्षु मन में बसै, पल पल आठूं याम।।5।।

लय :– सारंगा तेरी याद में.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मां दीपांजी रो लाडलो, भिखण हो शुभ अभिधान जी,
सोतां–उठतां ध्यान लगावां, होवै ज्यूं कल्याण जी,
भिक्खू स्याम–2, भिक्खू स्याम–2 ।।स्थायीपद।।

कण्टालिया लघु ग्राम में, ऊग्यो हो स्वर्ण विहान जी,
बल्लू शाह मन मोद न मायो, मिलग्यो ज्यूं वरदान जी।।1।।

धर्म क्रान्ति भारी करी, हो काम नहीं आसान जी,
सूरज निकल्यो चीर बादलां, हटग्यो तिमिर वितान जी।।2।।

बगड़ी री छतर्यां मझै, पहलो हो वास स्थान जी,
सिरियारी री हाट में प्रभु, करग्या स्वर्ग प्रयाण जी।।3।।

द्वेषी बणग्या भक्त हा, सुण सद्गुरु रो आह्वान जी,
'विजय' गीत गावां भीखण रा, जय–जय संत महान् जी।।4।।

लय :– रूणझुण बाजै घूंघरा, घोड़लियां रा बाजै पोरजी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सिरियारी रे कण–कण में, चहुँ दिशि में गिरी उपवन में,
महकै है मधुर–मधुर सौरभ नित, भीखण री
श्रद्धा पूरित हर मन में, सोतां उठतां क्षण–क्षण में,
महके है मधुर–मधुर सौरभ नित भीखण री।।स्थायीपद।।

नाम मंत्र ज्यूँ प्रभु रो साचो, रोग शोक दुःख दूर करै,
श्रद्धा स्यूं जो ध्यावै, भव सागर स्यूं उण री नाव तरै,
होवै है हरपल मंगल, पावै है आत्मिक संबल, महकै है...।।1।।

नगर केलवा अंधेरी ओरी में होग्यो चाँदणियो,
जोधाणै री हाटां में, दीवानजी अद्भुत अर्थ दियो,
तेरापंथ री नींव लगी, सत्य धर्म री अलख जगी, महकै है...।।2।।

प्रलोभनां री चिकणी माटी में दीपासुत नहीं फिसल्यो,
धरती रा हा भाग स्वाम रो, सोच्यो इक दिन स्वप्न फल्यो,
हटगी दूर घटा काली, छाई सबमें खुशहाली, महकै है...।।3।।

तपस्विनी सरिता में तपकर, बाबो पंथ निकाल्यो हो,
अगणित सह्या थपेड़ा युग रा, मनडो कदै न हाल्यो हो,
जीती जीवन री बाजी, द्वेषीजन होग्या राजी, महकै है...।।4।।

ध्यान अवस्था में ही बाबो, अन्तिम अभिनिष्क्रमण कर्यो,
सिरियारी रो धाम देखल्यो, रेवै हरदम हर्यो–भर्यो,
भक्ति भाव स्यूं सब आवै, 'विजय' शान्ति मन में पावै, महकै है... ।।5।।

लय :– फूल खिल्या म्हारै बागां में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बाबो उपकारी, जावां बलिहारी,
मन मन्दिर री मूरत, म्है हां पुजारी।।स्थायीपद।।

गहन अमां में चमक्यो बण ध्रुव तारो,
धरती पर ज्यूं फैल्यो ज्ञान उजारो,
थांरी शरण है जग में मंगलकारी।।1।।

सिंह सुपन स्यूं माता हरस मनायो,
कण्टालियै रो गौरव शिखरां चढ़ायो,
कर दिखलायो बो जो मन में धारी।।2।।

द्वेषी जनां रा कटु वच सहन कर्‌या हा,
तूफानां में भी डग आगै धर्‌या हा,
जिनवाणी स्यूं जोड़ी ही इकतारी।।3।।

बाबै भिखण री सचमुच अकथ कहाणी,
गूंज रही है जन–जन री आ जुबानी,
कलयुग में हा सतजुग रा अवतारी।।4।।

सिरियारी में बाबो सुरग सिधायो,
'विजय' धर्म रो साचो पथ दिखलायो,
नाम जपै है नित उठकर नर नारी।।5।।

लय :– बाबो अलबेलो छोड़ झमेलो.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भिखण रा गुण गावां, स्वाम री मूरत ध्यावां,
सुमिरण कर सुख पावां, भक्ति सरिता में न्हावां।।स्थायीपद।।

भिखण नाम परम हितकारी, विघ्वविनाशी मंगलकारी,
हर पल रटन लगावां, स्वाम री.....।।1।।

मरुभूमि नै सब्ज बणायी, शुद्ध धर्म री राह दिखाई,
युग–युग भूल न पावां, स्वाम री.....।।2।।

गहन अमां में कर्‌यो उजारो, मेट्‌यो घट–घट रो अंधियारो,
अपणा भाग्य सरावां, स्वाम री.....।।3।।

तेरापंथ में है खुशहाली, महाश्रमण सा है गणमाली,
मंगल सदा मनावां, स्वाम री.....।।4।।

भाद्रव सुद तरस दिन आयो, सिरियारी में सुरग सिधायो,
'विजय' ध्वजा फहरावां, स्वाम री.....।।5।।

लय :– कीर्तन

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भादूड़ी तेरस नै आज, सुरग सिधाया हा गणताज,
दरशण नै तरसै है सारा, आओ म्हारा नाथजी!
धरद्यो म्हारे सिर हाथ जी,
थे दरश दिलाओजी, थे मत बिसराओजी।।स्थायीपद।।

थे हो भगतां रा आधार, आशावां रा पूरणहार,
सूखी फुलवारी नै नीर पिलाओ, म्हारा....।।1।।

मंत्राक्षर सम थांरो नाम, जपतां सिद्ध हुवै सब काम,
भूल्योड़ां नै साची राह दिखाओ, म्हारा....।।2।।

सहनशीलता राखी बेहद, संकट री घड़ियां आंयी जद,
भगतां में भी बो वीरत्व जगाओ, म्हारा....।।3।।

लाखां ही प्राण्यां नै तार्‌या, भवसागर रै पार उतार्‌या,
अब तो म्हारे पर भी महर कराओ, म्हारा....।।4।।

ओम् भिक्षु री रटन लगाऊं, लक्ष्य शिखर पर चढ़तो जाऊं,
'संत विजय' री अन्तर् प्यास बुझाओ, म्हारा....।।5।।

लय :– लूंटा कर लंका रो राज

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भिक्खू नाम री मैं माला फेरूं भोर–भोर में,
सोतां–उठतां बा मूरत दीसै च्यारूं ओर में।।स्थायीपद।।

प्राणां स्यूं प्यारो लागै दीपां रो दुलारो,
मेंहदी राचै ज्यूं श्रद्धा म्हारै पोर–पोर में।।1।।

म्हारो तो सांवरियो है साचो सहारो,
ओ उजियारो अमां री रात घनघोर में।।2।।

एक सुगुरु नैं सौंपी शासन री सत्ता,
बाबो बांध्या चेला–चेल्यां नै एक डोर में।।3।।

'विजय' सुरग ज्यूँ शोभै तेरापंथ गण ओ,
दूजो नजर्यां न आवै चिहुँ दिशि ओर छोर में।।4।।

लय :– धीरै चाल रे पणिहारी.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ओ तो लाडांजी रो वीरो, माता वदना रो लाल,
चमक्यो चंदेरी रो चांद,साची श्रद्धा रो धाम,
सोतां–उठता करां हां परणाम जी–2।।स्थायी पद।।

कूं–कूं रा पगल्या लख छत पर माता मोद मनायो हो,
भागी सुत आयो है घर में,सब अनुमान लगायो हो,
मंगल स्वर महिलावां गाया, अवतरिया ज्यूं राम,
गोकुल रा घनश्याम, ओ तो .....।।1।।

ग्यारह वर्षां री उमर में संयम श्री स्वीकारी जी,
कालू गणी सिर हाथ धर्‌यो हो मोटा हा उपकारी जी,
वय बावीस वर्ष में खुलग्यो, एक नयो आयाम,
आचारज अभिराम ओ तो .....।।2।।

देश–विदेशां में तेरापंथ रो झण्डो फहरावै हो,
गौरवशाली जीवन गाथा हर जन शीश झुकावै हो,
स्वर्णाक्षर में अंकित रहसी, प्यारो तुलसी नाम,
जन सुमरै आठूं याम, ओ तो .....।।3।।

प्रभु रै अवदानां रो कोई पार नहीं म्है पावां हां,
'विजय' देव रै उपकारां पर म्है बलिहारी जावां हां,
मन मन्दिर में बसो नाथ! थे, सारो वांछित काम,
मेटो थे कष्ट तमाम, ओ तो .....।।4।।

लय :– म्हारो हेलो सुणोजी रामा पीर जी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गुरुवर श्री तुलसी म्हारै कालजै री कोर है,
नित उठ चरणां में शीश झुकावां सारा होऽऽऽ
श्रद्धा दरिये रो कोई ओर है न छोर है,
गौरव रा गीत नित उठ गावां सारा होऽऽऽ।।स्थायीपद।।

दूज चाँद बणकर आया तिमिर मिटायो–2 हो जी होऽऽ
मां वदना रो मन हुलसायो,
कुमकुम रा पगल्यां स्यूं थे खटेड़ कुल में अवतर्या,
जन्म दिवस गुरुवर रो मनावां सारा हो ऽऽऽ जन्म...।।1।।
अष्टम आचारज कालू चन्देरी में आया–2 हो जी होऽऽ
पथ में सर्प रो सुगन मिल्यो,
दीक्षा देकर निज कर स्यूं मनड़ै नै आश्वस्त कर्यो,
धर्यो हाथ सिर पर भाग सरावां सारा हो, धर्यो...।।2।।
वर्ष बावीस में गण भार संभाल्यो–2 हो जी होऽऽ
तेरापंथ री शान बढ़ायी,
संत–सतियां नै ज्ञान देकर थे तैयार कर्या,
पौरुष रा मीठा फल म्हैं पावां सारा हो, पौरुष...।।3।।
देख्यो विरोधां में नित मुस्कुरातो चेहरो–2 हो जी होऽऽ
पीकर गरल शिव ज्यूं अमृत उगलता,
मानवता रै हित खातिर जीवन भर तपता रह्या,
बांरै पथ पर ही कदम बढ़ावां सारा हो, बांरै...।।4।।
अगणित अवदानां स्यूं इतिहास भर्यो है–2 हो जी हो
सात समन्दर फैल्यो तुलसी रो नाम है,
गंगाणै सुरग सिधार्या नश्वर तन नै छौड़ नै,
सोतां–उठतां 'विजय' सुगुरु नै ध्यावां सारा हो, सोता...।।5।।

लय :– आओ जी आओ म्हारै हिवड़ै रा हार थे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मां वदना रा कूख उजागर, सद्गुण शेखर,
प्यारा तुलसी स्वाम, खेवनहारा तुलसी स्वाम।।
झूमर कुल रा दिव्य दिवाकर, अघहर सुखकर,
जन–जन रा हा राम, संघ सितारा तुलसी स्वाम।।स्थायीपद।।

दूज चाँद बणकर थे आया,चंदेरी रा भाग सवाया,
कीरत फैली अखिल विश्व में, प्रबल पुण्य रा धाम।।1।।

नींद भूख पर कर्यो नियंत्रण, आदर्शां स्यूं पूरित जीवन,
पौरुष री जीवन्त कहाणी, नहीं चाह्यो विश्राम।।2।।

अणुव्रत–प्रेक्षा पन्थ दिखायो, जनता रो अज्ञान मिटायो,
स्वर्णाक्षर में अंकित रहसी, प्रभुवर! थांरो नाम।।3।।

वृद्धावस्था में तरुणाई, देती ही साकार दिखाई,
'विजय' अमर गाथा गुरुवर री, शत–शत करूं प्रणाम।।4।।

लय :– चांदडलो चढ़ आयो गिगनार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

म्हांनै याद घणा आवै, तेरापंथ रा धणी,
दिल स्यूं भूल्या नहीं जावै, शासन मुकुट मणी,
मुकुट मणी, तेरापंथ रा घणी।।स्थायीपद।।

दस वर्षां री वय में मां संग संयम थे स्वीकार्यो जी,
तुलसी रै अनुशासन में बचपन रो समय गुजार्यो जी,
गुरु रो पथ दर्शन नित पावै, तेरापंथ रा धणी।।1।।

विनय–समर्पण गुण स्यूं गुरु रै मन में स्थान बणयोजी,
करता हा उपयोग समय रो जवीन नै चमकायो जी,
गौरव शब्दां में न समावै, तेरापंथ रा धणी।।2।।

विनय–समर्पण गुण स्यूं गुरु रै मन में स्थान बणायोजी,
करता हा उपयोग समय रो जीवन नै चमकायो जी,
गौरव शब्दां में न समावै, तेरापंथ रा धणी।।3।।

प्रेक्षा ध्यान, अणुव्रत रो थे शुभ संदेश सुणायोजी,
शिक्षा में जीवन विज्ञान नयो आयाम दिखायोजी,
दुनिया नै आलोक दिखावै, तेरापंथ रा धणी।।4।।

पुर सरदार शहर में चौमासो करवा पधराया जी,
सहसा सुरग सिधार्या गुरुवर मन सब रा मुरझाया जी,
'विजय' सकल जन शीश झुकावै, तेरापंथ रा धणी।।5।।

लय :– म्हारै सांस–सांस में बोलै रे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तेरापंथ रा सरताज, युगां तक राज करो,
भैक्षव गण रा सरताज, युगां तक राज करो,
राज करा, जय–विजय वरो।।स्थायीपद।।

भैक्षव शासन रा अधिकारी, मूरत थांरी जनमनहारी,
सगलां नै सात्त्विक नाज, युगां.....।।1।।

अद्भुत है प्रवचन री शैली, शोभा दिग् दिगन्त में फैली,
श्रम ने थै मान्यो साज, युगां.....।।2।।

आंख्यां स्यूं इमरत रस बरसै, दर्शन कर सारा जन हरसे,
थे तारणतिरणजहाज, युगां.....।।3।।

थांरै इंगित पर म्हैं चलस्यां, सिंचन पा तरूवर ज्यूं फलस्यां,
संकल्प करां हां आज, युगां.....।।4।।

तन ओ थांरो स्वस्थ रहे, मन मंगलमय मस्त रहै,
आशान्वित सकल समाज, युगां.....।।5।।

लय :– खिलौना माटी का.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

***म्हारे गुरुवर रो बड़ं भ्रात सहसा सुरग सिधायो रे,**
सुरग सिधायो, दिल भर आयो, सुणकर ओ संवाद,
सुरग सिधायो, वदना जायो, आसी सबनै याद।।स्थायीपद।।

सगलां रे प्रति मन में रखतो, वत्सलता अनपार,
च्यार तीर्थ री श्रद्धा रो बो, बणग्यो हो आधार।।1।।

गुरुवर रै तन री रखतो हो हरदम बो संभाल।
श्रद्धाकेन्द्र बण्यो जन–जन रो राखी इकसी चाल।।2।।

गुरुवर रै पोढ्यां बो सोतो, जाग्यां मिलतां त्यार।
करवाकर आहार सुगुरु नै करतो आप आहार।।3।।

गुरुवर रै सारै कामां में देतो हो सहयोग,
दुख–सुख री सब बात सुणाकर,हल्का होता लोग।।4।।

दर्द घणो रहतो घुटनां में,साथ न देतो गात,
फिर भी रहतो यात्रावां में, गुरुवर रै नित साथ।।5।।

सेवाभावीजी रो गण में, अमर बण्यो इतिहास,
मुल्क–मुल्क में फैली ज्यांरै, यश री मधुर सुवास।।6।।

सहज सरलता ही वाणी में, झरती मुख मुस्कान,
शब्दां में नहीं बांध सकूं मैं, जीवन 'विजय' महान्।।7।।

लय :– मांढ

*गुरुदेव श्री तुलसी के बड़भ्राता मुनि श्री चम्पालालजी स्वामी के प्रति

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उड़ान –

सौभागी आपां घणां, पायो संघ महान्,
पूरब करणी रो फल्यो, कल्पवृक्ष फलवान्।।
ओ शासन रो बड़लो दिन प्रतिदिन बढ़तो जावै रे,
इणरी शीतल छाया में मन मोद मनावै रे।।स्थायीपद।।

मरुधर री धरती पर बाबो भिखण रूंख लगायो रे,
उत्तरवर्ती आचारज इणनैं फलवान् बणायो रे,
महाश्रमण गणताज आज इणनै विकसावै रे।।1।।

तूफानां में भी न हिलै इणरी नींवां है गहरी रे,
त्यागी और तपस्वी संत–सत्यां हैं इणरा प्रहरी रे,
जन–जन रो है ओ आलम्बन घणो सुहावै रे।।2।।

कल्पवृक्ष ज्यूं शोभै शासन श्रद्धा स्यूं जो सेवै रे,
अक्षय सुख रो स्रोत बहाकर आधि–व्याधि हर लेवै रे,
मूर्च्छित प्राणां में ज्यूं नई चेतना आवै रे।।3।।

सद्गुण फल–फूलां स्यूं लडालूम है डाली–डाली रे,
गणमाली री छत्रछांह में सदा रहै खुशहाली रे,
दशां दिशां में संयम री सौरभ फैलावै रे।।4।।

इणरै गौरव नै दूजो कोई भी छू नहीं पावै रे,
है आदर्श जगत् में श्रद्धा स्यूं सब शीश झुकावै रे,
'विजय' संघ चरणां में तन–मन भेंट चढ़ावै रे।।5।।

लय :– आ बाबासा री लाडली कठीनै चाली रे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

म्हारै संघ में मर्यादा ही है जीवन आधार,
तेरापंथ बण्यो गुलजार।
मानव जीवन रो सिणगार।।स्थायीपद।।

मर्यादा है छत्र धूप में, मर्यादा है तम में दीप,
मर्यादा है कवच युद्ध में, सागर में मर्यादा द्वीप,
जग री भूल–भूलैया में है अनुपम सुख रो द्वार।।1।।

मर्यादा रे बलबूते पर बण्यो आपणो संघ महान्,
जन–जन री गहरी निष्ठा ही इणरो सबस्यूं सबल प्रमाण,
स्वामीजी री दूरदर्शिता रो अभिनव आकार।।2।।

रहसी सदा अमर दुनिया में बाबै री आ अद्भुत देन,
एक संघनायक चरणां में पावै सकल संघ है चैन,
है मजबूत संगठन गण रो पड़ नहीं सकै दरार।।3।।

मर्यादा रो लोप करै जो पावै नहीं कठे बो प्रीत,
खो देवै है अपणी शोभा कहलावै जग में अविनीत,
सीमा लांघ बहै जो पाणी हो ज्यावै बेकार।।4।।

मर्यादा री बलिवेदी पर तन–मन सब करद्यूं कुर्बान,
मर्यादा ही त्राण शरण है मर्यादा ने मानूं प्राण,
'विजय' संघ मर्यादावां नै नमन करूं शत बार।।5।।

लय :– म्हारै देश री आजादी पर तन–मन–धन कुर्बान

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संतां री वाणी, सुणल्यो लगाकर ध्यान,
ओ मीठो पाणी, करल्यो सुधारस पान,
करल्यो सुधारस पान, ओ भाई।।स्थायीपद।।

सबनै प्रभु री सीख सुणावै, सुख री पगडण्डी दिखलावै,
मिट ज्यावै अज्ञान, ओ भाई।।1।।

स्वार्थ रहित संतां री शिक्षा, धन री नहिं राखै है लिप्सा,
संतां री पहिचाण, ओ भाई।।2।।

पापी भी पावन हो ज्यावै, आधि–व्याधि रो मूल मिटावै,
पारस रतन समान, ओ भाई।।3।।

मांझी बणकर नैया खेवै, परमारथ रै पथ पर बेवै,
करुणावंत महान्, ओ भाई।।4।।

वाणी संतां री गुणकारी, जुड़े शीघ्र प्रभु स्यूं इकतारी,
'विजय' हुवै कल्याण, ओ भाई।।5।।

लय :– सीरियारी वाले.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सुणल्यो थे किसान भाई! गुरु री शिक्षा हितकारी,
सरसब्ज बणाणी चाहो, जो जीवन री फुलवारी।।स्थायी पद।।

श्रम रो जीवन जीओ थे, आ विशेषता है थांरी,
अनदाता मानै सारा, मोटी सेवा जनता री।।1।।

दुर्लभ है मिनख जमारो, प्रभुवाणी मंगलकारी,
थे करल्यो ज्ञान उजारो, बणसी जीवन सुखकारी।।2।।

छोड़ो शराब तम्बाकू, गुटको है रोग पिटारी,
व्यसनां में पड़ कित्ता नर, जीवन री बाजी हारी।।3।।

खाणो–पीणो सुध राखो, रेह्वै नित दूर बीमारी,
संकल्प करो जीवन में, जोड़ो प्रभु स्यूं इकतारी।।4।।

निःस्वारथ शिक्षा देवे, है 'विजय' सुगुरु उपकारी,
सबनै सन्मार्ग दिखावै, जावै है जन बलिहारी।।5।।

लय :– कठै स्यू आयी सूंठ....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मिनखां देही री, मिनखां देही री, मिनखां देही री,
इणरै गौरव नै सब गावै, इण नै उत्तम सभी बतावै,
इणमें निधियां सकल समावै।।स्थायीपद।।

बहुत समय स्यूं आ मिल पावै, सुरगां रा अधिपति ललचावै,
इण नै अनमोली बतलावै।।1।।

भौतिक सुख में मूरख गमावै, इणरो सार समझ नहीं पावै,
आखिर रो–रो नैण गमावै।।2।।

जो नर इणरो मोल भुलावै, निश दिन गफलत बीच बितावै,
अवसर चूक्यां फिर पछतावै।।3।।

शुभ कामां में समय लगावै, प्रतिपल शुद्ध भावना भावै,
बै नर जीवन सफल बणावै।।4।।

आ है नौका पार लगावै, अजर अमर घर तक पहुंचावै,
घट में प्रज्ञा दीप जलावै।।5।।

सद्गुरु गरिमा इणरी गावै, जो नर साचो पथ अपनावै,
बै ही धन्य 'विजय' कहलावै।।6।।

लय :– धरती धोरां री

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शरणो ले लै रे, धर्म रो शरणो ले लै रे,
तूं तो श्रद्धा रस में अपणै अन्तर्मन नै भेलै रे।।स्थायीपद।।

मोह–माया में बण्यो बावलो भटक रयो दिन रात,
याद नहीं आवै है तुझनै तप संयम री बात,
पापड़ बेलै रे, अरे क्यूं पापड़...।।1।।

राम नाम नै भूल गयो तूं करै पाप रा काम,
क्यूं नही सौचे अमर रयो कै कोई रो भी नाम,
संकट झेलै रे, किता तूं संकट...।।2।।

झूठ–कपट स्यूं बचकर रहणो है संतां रा बोल,
मैली मत कर इण चादर नै ओ जीवन अनमोल,
सीधे गैले रे, चाल तूं...।।3।।

धन परिजन री रक्षा खातिर करै घणा अन्याय,
पण क्यूं भूलै मौत सामने चालै नहीं उपाय,
झोड़ झमेले रे, जावै क्यूं....।।4।।

प्रेम और करुणा ने अपणै जीवन में दे स्थान,
'विजय' भलो व्यवहार सदा कर सब स्यूं बणै महान्,
सौरभ फैलै रे, गुणां री...।।5।।

लय :– मीठो बोलै रे, ऊपर स्यूं मीठो बोलै रे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

चौमासी चवदश आई है, आ नई प्रेरणा ल्याई है,
चौमासी चवदश आई है, जन–जन में खुशियां छाई है।।
।।स्थायीपद।।

अब स्यूं नियमित व्याख्यान सुणो, नित धर्म शास्त्र थे भणो–गुणो,
ज्यूं हटै कर्म री काई है, चौमासी..... ।।1।।

तप त्याग भावना विकसाओ, जीवन उपवन नै सरसाओ,
करणी प्रतिदिवस समाई है, चौमासी..... ।।2।।

निशि भोजन करणो थे छोड़ो, निज आत्मा स्यूं लयता जोड़ो,
आ सीख सुगुरु फरमाई है, चौमासी..... ।।3।।

बारह व्रत जीवन में धारो, थौड़े में ज्यादा मत हारो,
आ ही तो खरी कमाई, चौमासी..... ।।4।।

चौमासो है मंगलकारी, धर्माराधन अवसर भारी,
गुरु आशीर्वर फलदायी है, चौमासी..... ।।5।।

लय :– ओम् शान्ति जिनश्वेर शान्ति करो

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनि विजयकुमार

संक्षिप्त परिचय

- जन्म : फाल्गुन शुक्ला ६, वि.सं. २००६, सुजानगढ़
- दीक्षा : आषाढ़ शुक्ला १२, वि.सं. २०२३, बीदासर
- यात्राएं : बंगाल, बिहार, नेपाल, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, कर्णाटक, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, केरल, दिल्ली, पंजाब पंजाब प्रांत आदि।
- महामनस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती।
- तेरापंथ मनीषी मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' के सहवर्ती
- रुचि : अध्ययन, लेखन, संगीत, जन-संपर्क आदि।

रचित कृतियों की संक्षिप्त झलक

१. मधुकलश
२. मधुमाला
३. स्वर माधुरी
४. सुधा घूंट
५. मधुकोष
६. मधुवन
७. झंकार
८. संगीत सुषमा
९. गीत माधुरी
१०. संगीत सरिता
११. नया दौर
१२. नई पौध
१३. नई भोर
१४. खुली आंख
१५. एक और उड़ान
१६. मुस्कान
१७. संतों के बोल
१८. गुरु चालीसा
१९. आदिम गाथा
२०. संवाद सरिता
२१. निर्माण की दहलीज पर
२२. बात-बात में बोध
२३. टी.वी. पुराण (हिन्दी व मराठी में)
२४. असली टॉनिक
२५. सफलता के सोपान
२६. बदलना सीखो
२७. व्याख्यान वाटिका
२८. युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी चित्र कथा (हिन्दी व अंग्रेजी में)
२९. विनय से विद्या
३०. जैसा संग वैसा रंग (चित्र कथा)
३१. जैन जीवन शैली (चित्र कथा)
३२. Personality in Rhythm
३३. Inspiring Rays
३४. संवादों में जीवन विज्ञान व अन्य।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org